राजस्थान की राजनीति

E-mail: tniawaz.news@gmail.com | आपकी आवाज के साथ.... | RAJHIN/2012/43137

हिन्दुस्तान पत्रिका HINDUSTAN KI AWAZ

जयपुर, दौसा, करौली, अलवर, टोंक, अजमेर, भरतपुर, धौलपुर, बीकानेर, कोटा, सवाईमाधोपुर से प्रसारित

www.hpnews.in/www.tniawaaz.in | जयपुर, रविवार 05 मई, 2024 | » वर्षः 2 | » अंकः 190 | » पृष्ठः 8 | » मूल्यः 2.00 रु.

कांग्रेस में बिखरावः लवली-राजकुमार समेत कई नेताओं ने थामा भाजपा का दामन, शीर्ष नेतृत्व के फैसले से थे नाराज

राजस्थान की राजनीति

नई दिल्ली। दिल्ली में लोकसभा की चुनावी सियासत दिलचस्प हो गई है। प्रदेश कांग्रेस अब बिखरती नजर आ रही है। दिल्ली यूनिट के दिग्गज नेताओं ने बगावती तेवर अख्तियार कर रखा है। इसकी बानगी शनिवार देखने को भी मिली। पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अरविंद सिंह लवली के साथ चार दिग्गज नेताओं ने भाजपा का दामन थाम लिया। प्रदेश कांग्रेस नेता अपने राष्ट्रीय नेतृत्व से ही नाराज है। उन्हें बिना तवज्जो दिए आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन और उम्मीदवार को उतारना रास नहीं आया। कन्हैया कुमार के रूप में बाहरी नेता को और डॉ. उदित राज को आरक्षित सीट से चुनाव में उतारना दिल्ली के पुराने दिग्गज नेताओं को पसंद नहीं आया। राजनीतिक जानकार यह भी तर्क दे रहे है कि अरविंदर सिंह लवली और राजकुमार चौहान जैसे पुराने कांग्रेसी नेता को दूसरी बार भाजपा में शामिल होना पार्टी के अंदर बिखराव का बड़ा संदेश है। चूंकि पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के बाद यही सेकेंड लाइन के कांग्रेसी नेता है। उत्तर पूर्वी दिल्ली सीट से कांग्रेस आलाकमान ने जब से कन्हैया कुमार को उतारा तभी से विरोध के तेवर कांग्रेस नेताओं में उठने लगे थे। इसी तरह उत्तर-पश्चिमी दिल्ली सीट से डॉ. उदित राज भी प्रदेश नेतृत्व को पसंद नहीं थे। पार्टी कार्यालय में विरोध-प्रदर्शन तक हुआ, पार्टी के भीतर ही एक नया गुट उभरा, यहां तक की इस्तीफा भी दे दिया। अपनी राय भी जाहिर की कि बिना किसी सलाह मसवरा लिए केंद्रीय नेतृत्व अपना तुगलकी फरमान जारी करते हुए उम्मीदवार थोप दिया। दरअसल, उत्तर-पूर्वी सीट पर लवली की नजर थी और उत्तर पश्चिम सीट पर राजकुमार चौहान की।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में वायुसेना के वाहन पर घात लगाकर हमला, एक जवान बलिदान, चार घायल

राजस्थान की राजनीति

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में शनिवार को आतंकवादियों ने भारतीय वायु सेना (आईएएफ) के एक वाहन समेत दो वाहनों पर गोलीबारी की। इस हमले में पांच सुरक्षाकर्मी घायल हो गए, जिनमें से एक जवान की इलाज के दौरान मौत हो गई। अधिकारियों ने बताया कि हमला शाम को शशिधर के पास हुआ जब वाहन जिले के सुरनकोट इलाके में सनाई टॉप की ओर जा रहे थे। पांच जवान घायल हो गए, जिनमें से दो की हालत गंभीर बनी हुई है। अधिकारियों ने बताया कि उन्हें अस्पताल ले जाया गया। आतंकवादियों का पता लगाने और उन्हें मार गिराने के लिए बड़े पैमाने पर तलाशी और घेराबंदी अभियान शुरू किया गया है। वायुसेना अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों के साथ आगामी गोलीबारी में वायु योद्धाओं ने जवाबी गोलीबारी करके लड़ाई लड़ी। इस हमले में पांच IAF कर्मियों को गोली लग गई और उन्हें तत्काल चिकित्सा के लिए निकटतम सैन्य अस्पताल ले जाया गया। वहीं, एक वायु योद्धा की बाद में चोटों के कारण मृत्यु हो गई। स्थानीय सुरक्षा बलों द्वारा आगे की कार्रवाई जारी है। अधिकारियों ने कहा कि अनंतनाग-राजौरी लोकसभा क्षेत्र में मतदान से तीन हफ्ते पहले आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में भारतीय वायु सेना (आईएएफ) सहित दो सुरक्षा वाहनों पर घात लगाकर हमला किया। इस हमले में पांच सैनिक घायल हो गए। पुंछ अनंतनाग-राजौरी संसदीय क्षेत्र का हिस्सा है जहां 25 मई को छठे चरण में मतदान होना है।

वायुसेना ने कही ये बात

वायुसेना ने अपनी एक्स पोस्ट पर कहा कि शाम को शशिधर के पास आतंकवादियों ने भारतीय वायुसेना के एक वाहन सहित दो वाहनों पर गोलीबारी की, जिसमें पांच सुरक्षाकर्मी घायल हो गए, जिनमें से दो की हालत गंभीर है। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में शाहसितार के पास आतंकवादियों ने भारतीय वायु सेना के वाहन काफिले पर हमला किया। स्थानीय सैन्य इकाइयों द्वारा क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी अभियान जारी है। काफिले को सुरक्षित कर लिया गया है और आगे की जांच जारी है। उन्होंने कहा कि वाहन जिले के सुरनकोट इलाके में पास के सनाई टॉप की ओर जा रहे थे, उन्होंने आतंकवादियों के उसी समूह के शामिल होने का संदेह जताया, जिन्होंने पिछले साल 21 दिसंबर को बुफलियाज से सटे सैनिकों पर घात लगाकर हमला किया था, जिसमें चार सैनिक मारे गए थे और अन्य सैनिक घायल हुए थे।

सुरक्षाबलों को तलाशी अभियान जारी

अधिकारियों ने कहा कि सेना के ट्रक को आतंकवादियों की गोलीबारी का सबसे बड़ा खामियाजा भुगतना पड़ा, जो एके असॉल्ट राइफलों से लैस थे और माना जाता है कि वे पास के जंगलों में भाग गए थे। उन्होंने बताया कि सेना और पुलिस को इलाके में भेजा गया है और आतंकवादियों का पता लगाने और उन्हें मार गिराने के लिए बड़े पैमाने पर तलाशी और घेराबंदी अभियान शुरू किया गया है। संदिग्ध व्यक्तियों की आवाजाही के बारे में इनपुट मिलने के बाद अर्धसैनिक बलों की सहायता से पुलिस ने शुक्रवार से पुंछ शहर में तलाशी ली। हालांकि, अधिकारियों ने कहा कि ऑपरेशन के दौरान किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया।

आतंक के नए केंद्र

राजौरी और पुंछ क्षेत्र पिछले कुछ वर्षों में आतंक के नए केंद्र बन चुके हैं। आतंकी वारदात को अंजाम देकर घने जंगल में छिप जाते हैं। आशंका है कि आतंकियों ने घने जंगल के भीतर ठिकाने बना लिए हैं। यही वजह है कि सुरक्षाबलों को इस क्षेत्र में कोई बड़ी कामयाबी नहीं मिल पाई है। 22 अप्रैल, 2024- राजौरी के थन्नामंडी में सैन्य जवान के घर आतंकी हमला। जवान के भाई की हत्या।

22 दिसंबर, 2023- पुंछ के टोपा पीर क्षेत्र में सैन्य वाहन पर हमला, सेना के चार जवान बलिदान।

22-23 नवंबर, 2023- राजौरी के बाजीमाल क्षेत्र में मुठभेड़ में सेना के दो कैप्टन व तीन जवान बलिदान।

5 मई, 2023- राजौरी के केसरी हिल क्षेत्र में आतंकी हमले में पांच जवान बलिदान।

20 अप्रैल, 2023- पुंछ में सैन्य वाहन को घेरकर निशाना बनाया, जिसमें पांच जवान बलिदान।

एक जनवरी, 2023- राजौरी के ढांगरी गांव में आतंकियों ने सात ग्रामीणों की हत्या कर दी।

राजस्थान में सीआईडी टीम पर हमला, संदिग्ध को हिरासत से छुड़ाकर ले गए ग्रामीण

राजस्थान की राजनीति

भरतपुर। राजस्थान के भरतपुर में शनिवार को बड़ा बवाल हो गया। यहां संदिग्ध को गिरफ्तार कर ले जाने की कोशिश करने वाली सीआईडी टीम पर ग्रामीणों ने हमला करते हुए हिरासत से संदिग्ध को छुड़ाकर ले गए। इसके बाद में पुलिस मौके पर पहुंची और फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है। इस हमले में सीआईडी के दो कांस्टेबल घायल हुए है। भुसावर थाना इलाके के गाँव पथैना में सीआईडी की एक स्पेशल टीम इंस्पेक्टर रूप राम के नेतृत्व में संदिग्ध संजय सिंह को पकड़ने पहुंची थी। टीम ने उसे घर से पकड़ लिया लेकिन उसके परिजन और ग्रामीणों ने सीआईडी टीम को बंधक बनाकर उन पर हमला कर दिया। घटना में कई सीआईडी के दो कॉन्सटेबलों को चोटें आई हैं। घटना की सूचना जब भुसावर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। इसके बाद सीआईडी के कर्मचारियों को पुलिस की ओर से छुड़ाया गया। पुलिस ने आरोपियों के परिजनों को हिरासत में ले लिया है। भुसावर थाना प्रभारी सुनील गुप्ता ने बताया कि पथैना गांव में भरतपुर जोन की सीआईडी स्पेशल ब्रांच किसी संदिग्ध व्यक्ति की तलाश में गई थी। सीआईडी की टीम ने मौके से संदिग्ध को पकड़ लिया था। आरोपी के परिजनों और ग्रामीणों ने सीआईडी के कब्जे से आरोपी को छुड़ा लिया और टीम के साथ मारपीट करने लगे। आरोपियों की तलाश की जा रही है। सीआईडी के कर्मचारियों का मेडिकल करवाया जा रहा है। मामला दर्ज कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। टीम सीआईडी के SP जोन भरतपुर के निरीक्षक रूप राम मीणा के नेतृत्व में गई थी। 4 सीआईडी के कर्मचारी थे। जिसमें से ड्राइवर और उप निरीक्षक के चोट लगी है। फिलहाल आरोपी मारपीट करने के बाद से फरार हैं। जानकारी के मुताबिक संदिग्ध संजय सिंह है जो आर्मी में जवान है और फिलहाल वह अपने घर एक महीने की छुट्टी पर आया हुआ है 7 सीआईडी के लिए वह संदिग्ध है इसलिए उसे पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया था मगर ग्रामीणों ने हमला कर उसे छुड़ा लिया।

रोहित वेमुला की आत्महत्या पर राजनीति के लिए माफी मांगें राहुल', टाक्सिक दुकान चला रहे थे कांग्रेस नेताः सीतारमण

राजस्थान की राजनीति

पुणे। केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को हैदराबाद विश्वविद्यालय के छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या का 'राजनीतिकरण' करने के लिए माफी मांगनी चाहिए। रोहित ने वर्ष 2016 में आत्महत्या की थी। पुणे में पत्रकारों से बात करते हुए सीतारमण ने कहा कि कांग्रेस शासित राज्य में अदालत में क्लोजर रिपोर्ट दायर किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि रोहित दलित नहीं था। उसके पास एससी (अनुसूचित जाति) का फर्जी प्रमाण पत्र था। रोहित को डर था कि उसकी 'वास्तविक पहचान' उजागर हो जाएगी। लेकिन कांग्रेस ने सार्वजनिक रूप से मुद्दे का राजनीतिकरण करने की कोशिश की थी। संसद में राहुल गांधी ने बयान दिया कि रोहित पर दबाव डाला गया। सीतारमण ने कहा, राहुल को उस समय लोकसभा में दिए गए अपने भाषणों को सुनना चाहिए और देश से माफी मांगनी चाहिए। उन्हें एससी समुदाय से भी माफी मांगनी चाहिए जिनका उन्होंने दुरुपयोग किया। यह दलित मुद्दा नहीं था, लेकिन (राहुल ने) इसे दलित मुद्दे की तरह बना दिया। 'मोहब्बत की दुकान' चलाने की बात कहने वाले 'टाक्सिक दुकान' चला रहे थे। बाद में डेक्कन कॉलेज में 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण को साकार करने में उच्च शिक्षा की भूमिका पर छात्रों के साथ बातचीत करते हुए सीतारमण ने दावा किया कि नैरेटिव बनाया गया कि सरकार छात्रों और अनुसूचित जाति के खिलाफ है।

भारतीय सेना के पास होगा दुनिया का पहला हाई एल्टीट्यूड लॉजिस्टिक्स ड्रोन, एयर एंबुलेंस का भी करेगा काम

राजस्थान की राजनीति

नई दिल्ली। दूर दराज के इलाकों और हाई एल्टीट्यूड एरिया में भारतीय सेना को सामान पहुंचाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। खासतौर पर 18 हजार फीट के ऊपर कम वजन का सामान या हथियार पहुंचाने के लिए या तो हेलीकॉप्टर पर निर्भर रहना पड़ता है या फिर अगर वहां सड़क मार्ग है, तो वाहन के जरिए ही पहुंचाया जा सकता है। वहीं, अब यह काम ड्रोन करेगा, क्योंकि भारतीय सेना को 40 किग्रा पेलोड की क्षमता वाले स्वदेशी तकनीक से बने ऐरावत ड्रोन बेहद पसंद आए हैं और उम्मीद जताई जा रही है कि जल्द ही इनकी डिलीवरी भी शुरू की जाएगी। फिरोजाबाद की ऑर्डिनेंस इक्विपमेंट फैक्टरी हजरतपुर ने सैन्य ऑपरेशन के लिए 20 से 100 किग्रा का वजन ढोने की क्षमता वाले लॉजिस्टिक ड्रोनों को डिजाइन किया है, इनमें ऐरावत-1 की क्षमता 20 किग्रा, ऐरावत-2 की क्षमता 40 किग्रा है। जबकि ऐरावत-3 जिसकी पेलोड क्षमता 100 किग्रा है, हालांकि वह अभी डेवलपमेंट फेज में है। ऐरावत-3 उच्च हिमालय इलाकों में भारतीय सेना के लिए एयर एम्बुलेंस के तौर पर काम करेगा। ऑर्डिनेंस फैक्टरी का कहना है कि उन्हें उधमपुर आर्मी कमांड से 13 ऐरावत-3 ड्रोन डेवलप करने के ऑर्डर मिले हैं। ऑर्डिनेंस फैक्टरी का दावा है कि ऐरावत दुनिया का पहला हाई एल्टीट्यूड लॉजिस्टिक्स ड्रोन है। हाल ही में वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने रक्षा मंत्रालय की अधीन डिफेंस पीएसयू ट्रूप कंफर्ट्स लिमिटेड (टीसीएल) के कानपुर स्थित मुख्यालय का दौरा किया था। वहीं ऑर्डिनेंस इक्विपमेंट फैक्टरी हजरतपुर असल में टीसीएल की ही यूनिट है

सेना वहन करेगी ट्रायल का खर्च

इस साल की शुरुआत में ऐरावत-2 लॉजिस्टिक ड्रोन के उत्तरी कश्मीर में उरी और कुपवाड़ा, पूर्वी लद्दाख में न्योमा और अरुणाचल प्रदेश के तवांग सेक्टर में 12,500 फीट तक हाई एल्टीट्यूड इलाकों में परीक्षण आयोजित किए गए थे। ड्रोन ने पेलोड के साथ भारत-चीन सीमा में 5000 मीटर की ऊंचाई तक भी उड़ान भरी। यहां तक कि खराब मौसम में भी ऐरावत ने सफलतापूर्वक मिशन पूरा किया। ट्रायल में पाया गया कि आपदा के दौरान ये ड्रोन पूरी तरह से सफल रहे थे। वहीं वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ ने इसके दुर्गम इलाकों समेत बॉर्डर क्षेत्रों में और परीक्षण करने के लिए कहा है, जिसके ट्रायल का खर्च खुद सेना वहन करेगी।

18 हजार फीट तक उड़ान की क्षमता

ऐरावत 2 की खासियतों की बात करें, तो इसकी पेलोड क्षमता 40 किग्रा है। इसमें आठ रोटर लगे हैं, जो ड्रोन को चारों दिशाओं में घुमा सकते हैं। यह एक घंटे में फुल चार्ज हो सकता है और 45 मिनट तक हवा में रह सकता है। ऐरावत-2 10 किमी की रेंज में सामान की डिलीवरी कर सकता है। ऑर्डिनेंस फैक्टरी का दावा है कि ऐरावत-2 लॉजिस्टिक ड्रोन समुद्री तट से 18 हजार फीट ऊंचाई तक उड़ सकता है।

शाह ने माना राजस्थान में बीजेपी की सीटें कम होंगी, एक-दो सीटों की हो सकती है कटौती

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। राजस्थान लोकसभा चुनावों में बीजेपी की हैट्रिक पर केंद्रीय गृह मंत्री और पार्टी के सबसे बड़े रणनीतिकार अमित शाह ने ही सवाल उठा दिए हैं। अमित शाह ने एक टीवी इंटरव्यू में सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार किया है कि राजस्थान में सीटें कम होंगी। शाह ने कहा- राजस्थान में हमारी बहुत कम कटौती एक-दो सीटों की हो सकती है। लोकसभा चुनावों के रिजल्ट से पहले शाह के इस बयान को सियासी रूप से काफी अहम माना जा रहा है। 400 सीटों के सवाल के जवाब में शाह ने कहा- आप नतीजे आने दीजिए, चौंक जाएंगे। 400 का आंकड़ा आएगा। महाराष्ट्र में भी हम 40 के आस-पास सीट जीतेंगे, 41, 40 या 42 हो जाए। यही रिजल्ट रहेगा। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक हम शत प्रतिशत रिपीट करेंगे। राजस्थान में हमारी बहुत कम कटौती एक दो सीटों की हो सकती है। उत्तर प्रदेश में हम 5 से 7 सीट की बढ़ोतरी करेंगे। उड़ीसा में 16 के आस-पास जा सकते हैं। असम में भी 12 को क्रॉस करेंगे। अमित शाह के बयान से यह साफ हो गया है कि राजस्थान में 25 सीटें जीतने की हैट्रिक नहीं लगने वाली। पार्टी के पास ऊपर तक फीडबैक है कि पूरी 25 सीटें नहीं आएगी। राजस्थान के पहले फेज में जिस तरह वोटिंग गिरी। उसका नुकसान बीजेपी को हो सकता है। इस बार 25 सीटों पर 2019 के मुकाबले 4.57 प्रतिशत तक कम वोट पड़े हैं। पिछली बार 66.07 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। जो इस बार घटकर 61.57 प्रतिशत रह गई। बाड़मेर, बांसवाड़ा समेत तीन सीटों को छोड़कर किसी भी लोकसभा सीट पर 2019 से ज्यादा वोट नहीं पड़े। बीजेपी ने लोकसभा चुनावों के दौरान सात सीटों को कमजोर माना था। कमजोर मानी जाने वाली सीटों में दौसा, झुंझुनूं, बाड़मेर, चूरू, नागौर, सीकर, करौली-धौलपुर शामिल थी। पार्टी ने इन सीटों पर खूब फोकस किया था। पीएम नरेंद्र मोदी और दूसरे स्टार प्रचारकों की सभाएं करवाकर माहौल बदलने का प्रयास किया था।

शेखावाटी, मारवाड़ और पूर्वी राजस्थान में स्थानीय मुद्दे हावी रहे

बीजेपी के सामने इस बार शेखावाटी और पूर्वी राजस्थान चुनौती बना हुआ था। विधानसभा चुनावों के दौरान सीकर, चूरू, झुंझुनूं, नागौर, श्रीगंगानगर, बूंदी, धौलपुर में बीजेपी का प्रदर्शन बहुत कमजोर रहा था। पार्टी के रणनीतिकारों का मानना है कि यह गैप लोकसभा में भी दूर नहीं हुआ। इस वजह से पार्टी को कुछ सीटों का नुकसान हो सकता है। राष्ट्रीय मुद्दों की जगह स्थानीय मुद्दे हावी होने और कई सीटों पर चुनाव जातीय समीकरणों पर शिफ्ट होने से भी नुकसान की संभावना जताई जा रही है। अमित शाह के बयान ने विपक्षी कांग्रेस को भी बोलने के लिए मुद्दा दे दिया है। पार्टी के सबसे बड़े रणनीतिकार के बयान को आधार बनाकर कांग्रेस अब बीजेपी पर सियासी वार-पलटवार करेंगी। सीएम भजनलाल शर्मा सहित बीजेपी के सभी नेता अब तक राजस्थान में 25 सीटें जीतने का दावा करते रहे हैं, इस बयान ने उन दावों पर भी सवाल उठा दिए हैं।

सिर्फ जाति जनगणना नहीं, आर्थिक सर्वे भी होगाः राहुल गांधी

राजस्थान की राजनीति

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का कहना है कि अगर उनकी सरकार आती है तो वह जाति जनगणना कराएंगे। राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि यह सिर्फ जाति जनगणना नहीं होगी, यह आर्थिक सर्वे होगा। मतलब हिंदुस्तान में किसके हाथ में कितना पैसा है, हर संस्था का सर्वे होगा। इससे पता लग सकेगा कि किस वर्ग के लोगों की क्या स्थिति है। राहुल गांधी ने कहा कि जाति जनगणना से पूरे देश को पता लग जाएगा कि हिंदुस्तान का धन कहां है, किसके हाथ में है। पिछड़ों के हाथ में कितना, दलितों के हाथ में कितना, गरीब सामान्य वर्ग और महिलाओं के हाथ में कितना धन है।

अग्निपथ योजना को समाप्त करेंगे- राहुल गांधी

राहुल गांधी ने आगे कहा कि हमने अपने घोषणा पत्र में स्पष्ट लिखा है अग्निपथ योजना को समाप्त करेंगे। वह कांग्रेस पार्टी की ओर से आयोजित न्याय मंच से युवाओं को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान अग्निपथ योजना को लेकर उन्होंने कहा कि हमारे जिन डेढ़ लाख युवाओं ने आर्मी की पूरी प्रक्रिया पूरी की है उनको कोई न कोई कंपनसेशन तो मिलना ही चाहिए। कोई न कोई रास्ता उनके लिए निकलना ही चाहिए। उन्होंने दावा किया कि यह योजना हितधारकों की सलाह से नहीं बनाई गई थी।

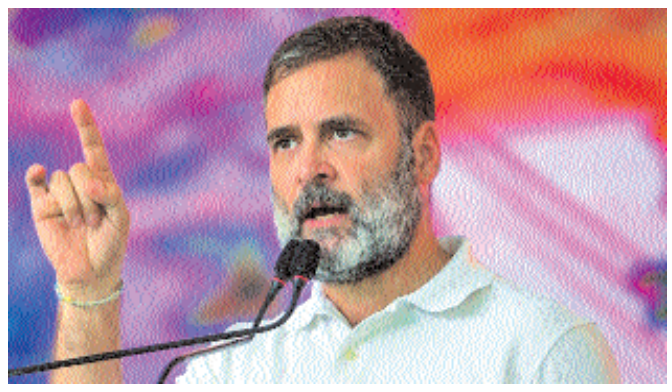

नौकरी पर क्या बोले कांग्रेस नेता

राहुल गांधी ने कहा कि पहले ओबीसी, दलित, गरीब आम वर्ग को सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरी मिल जाती थी, सेना में जा सकते थे, पेंशन मिलती थी। उन्होंने कहा कि अग्निपथ का मकसद है कि गरीब लोगों को पेंशन नहीं देना चाहते, उनको शहीद का दर्जा नहीं देना चाहते, उनको कैंटीन की सुविधा नहीं देना चाहते। अमीर लोगों को यह सब मिल जाएगा मगर जो जवान है जो शहीद होने के लिए तैयार है वह दो तरीके के बन रहे हैं - एक अग्निवीर है जिसे गोली लगेगी तो उसे कहा जाएगा कि वह शहीद नहीं है। वहीं एक नॉर्मल जवान जिसे पेंशन मिलेगी, उसे शहीद का दर्जा मिलेगा। राहुल गांधी ने कहा सोचिए अगर चीन से युद्ध हुआ तो एक अग्निवीर और एक सामान्य जवान लड़ाई लड़ रहा होगा तो अग्निवीर क्या सोचेगा। अग्निवीर सोचेगा अगर मुझे कुछ हो गया तो मेरे परिवार की कोई देखभाल नहीं करेगा। वहीं, सामान्य जवान को कुछ हुआ तो उसके परिवार को पेंशन मिलेगी उसके परिवार की देखरेख की जाएगी। आर्मी का मनोबल तो यहीं समाप्त कर दिया गया। आर्मी में फूट यहीं डाल दी, इसलिए हम अग्निपथ को समाप्त करने जा रहे हैं।

पेपर लीक पर भी बोले राहुल गांधी

राहुल गांधी ने युवाओं की ओर से रोजगार के विषय में पूछे गए प्रश्नों के जवाब में कहा कि हमने अपने मेनिफेस्टो में 'पहली नौकरी पक्की' का वादा किया है। मनरेगा में रोजगार का अधिकार मिलता है। मजदूरी करने के लिए सरकार अधिकार देती है, अब हम पहली नौकरी का अधिकार हिंदुस्तान के युवाओं को देने जा रहे हैं। ग्रेजुएट और डिप्लोमा होल्डर्स को यह अधिकार मिलेगा। उन्हें 8,500 रुपए प्रति माह अप्रेंटिस के जरिए दिए जाएंगे। इससे युवाओं को जॉब मार्केट में एंट्री मिल जाएगी। राहुल ने कहा कि युवा अगर सरकार से एक साल की नौकरी मांगेंगे तो सरकार को वह नौकरी देनी ही होगी। यह कांग्रेस पार्टी का एक आइडिया है। उन्होंने कहा कि भर्ती परीक्षाओं में पेपर लीक जैसी समस्या के समाधान के लिए हम सख्त कानून लाएंगे। इसके साथ ही निजी कंपनियां ये परीक्षाएं नहीं ले सकेंगी। केवल सरकारी एजेंसियां ही परीक्षा लेंगी।

राहुल गांधी पर बीजेपी नेताओं ने की आरोपों की 'बमबारी'

लोकसभा चुनाव के विपक्षी नेता राहुल गांधी वायनाड के साथ ही रायबरेली से चुनाव लड़ रहे हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के रायबरेली से चुनाव में खड़ा होने पर बीजेपी के कई नेताओं ने उन पर खूब निशाना साधा है। पीएम मोदी ने राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि राहुल गांधी अमेठी से चुनाव लड़ने से डर गए हैं। वहीं विपक्ष भी बीजेपी को पलटवार करने से नहीं चूक रहा है। जब पीएम मोदी राहुल गांधी पर रायबरेली से चुनाव लड़ने पर उन्हें डरपोक बताया तो इसके पलटवार में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पीएम मोदी पर तंज कसा। खरगे ने पीएम मोदी के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि कोई उनसे पूछिए, वो खुद ही भागकर वाराणसी आए ना। कांग्रेस के रायबरेली की सीट से पत्ते खोलते ही उसमें राहुल गांधी का नाम नजर आया। जिसके बाद पीएम मोदी ने राहुल गांधी का नाम लिए बिना कहा कि ये लोग घूम- घूम कर सबको कहते हैं डरो मत। अब मैं भी इन्हें यही कहूंगा- डरो मत, भागो मत। पीएम मोदी ने आगे कहा कि 'शहजादे' वायनाड में हारने वाले हैं और हार के डर से जैसे ही मतदान समाप्त होगा वह तीसरी सीट खोजने लग जाएंगे। पीएम मोदी ने आगे कहा कि राहुल गांधी अमेठी से भी इतना डर गए कि वहां से भागकर अब वो रायबरेली में रास्ता खोज रहे हैं। आज गुजरात की एक रैली को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस और राहुल गांधी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाइयों- बहनों कांग्रेस पार्टी राहुल गांधी के नेतृत्व में चुनाव लड़ रही है। इनके नेता राहुल बाबा जब अमेठी से हार गए तो वायनाड चले गए। अब वह वायनाड से भी हारने वाले हैं तो रायबरेली भागकर आ गए। उसके बाद अमित शाह ने राहुल गांधी को सलाह देते हुए कहा कि उन्हें मेरी एक सलाह है समस्या सीट में नहीं है, समस्या आप में है। रायबरेली से भी भारी वोटों से हारेंगे। अगर आप भाग भी जाएंगे तो आपको लोग खोज लेंगे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के अमेठी छोड़कर रायबरेली से चुनाव लड़ने पर बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता आरपी सिंह ने उनकी चुटकी ले ली। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि राहुल गांधी 'रणछोड़' हो गए हैं।कल तक राहुल अपने कार्यकर्ताओं से नहीं डरने की बात कर रहे थे

परिंडे लगाकर मनाया पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का जन्मदिन

राजस्थान की राजनीति

कोटकासिम (चेतराम सैनी)। पूर्वमुख्यमंत्री अशोक गहलोत के जन्मदिन पर कोटकासिम में विभिन्न सामाजिक संगठनो द्वारा धार्मिक अनुष्ठानो का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ताओ ने सार्वजनिक स्थानो पर परिंडे लगाकर मूक प्राणियो के लिए दाना व पानी की व्यवस्था की। कस्बे के नवज्योति कॉलोनी स्थित महावर वाली बगीची सहित विभिन्न स्थानो पर परिंडे लगाये गये तथा परिंडो में नियमित रूप से पानी डालने का संकल्प लिया गया। वहीं अस्पताल में मरीजो को फल वितरित किये गये। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता धन्ना सैनी ने कहा की जन्मदिन एवं विशेष अवसरो पर ऐसे भीषण गर्मी के मौसम में पशु-पक्षियो के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करना हम सभी का कर्तव्य बनता है। उन्होने कहा की ऐसे पुण्य कार्यो के लिए युवाओ को आगे आना चाहिए तथा मूक प्राणियो की सेवाभाव में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। इस दौरान महावर वाली बगीची सहित सार्वजनिक स्थानो पर परिंडे बांधे गये। इस अवसर पर समाजसेवी रामोतार सेन, विशाल चांगवाल, संजय सैनी, राजेन्द्र कुमार, अशोक यादव, गोपाल पहाडीवाल, अशोक तिजारिया ने महावर वाली बगीची में परिंडे लगाकर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का जन्मदिन मनाया गया।

करो योग रहो निरोग थीम पर कार्यक्रम की दी जानकारी

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को दिया योग प्रशिक्षण

राजस्थान की राजनीति

कोटकासिम (चेतराम सैनी)। शनिवार को ब्लॉक कोटकासिम के आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को आयुर्वेद विभाग के योग शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। आयुर्वेद विभाग के नोडल अधिकारी डॉ0 अरुण मुद्गल ने बताया की करो योग रहो निरोग थीम पर सरकार ने ग्राउंड स्तर पर आंगनबाड़ी केंदो में आने वाले बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को स्वस्थ रहने हेतु योग से जोड़ने के क्रम में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को योग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को योग के संबंध में जागरूक करके आंगनबाड़ी में आने वाली सभी गर्भवती महिलाओं को स्वस्थ रहने के लिए किस प्रकार योगासन कराई जाए ताकि वह स्वस्थ बच्चे को जन्म दे सके एवं स्वयं भी स्वस्थ रह सके इसके लिए योगाभ्यास का प्रशिक्षण कराया जा रहा है। ब्लॉक आयुष चिकित्सालय एवं डीपीओ ऑफिस प्रांगण में योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें योग प्रशिक्षण एवं आयुर्वेद चिकित्सकों ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को योग के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं योगासन के बारे में समझाया गया। इस अवसर पर सीडीपीओ सुनीता यादव, एलएस शकुंतला, लोकायुक्त ब्लॉक आयुष चिकित्सालय के चिकित्सक डॉक्टर रंजना नरूला, डॉक्टर साक्षी नागर, डॉक्टर शोभना, योग प्रशिक्षक अनिल, रेनू, निकिता, अनुराधा सहित काफी संख्या में चिकित्सक एवं आंगनबाडी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

ग्राम सेवा सहकारी समिति आलूदा के व्यवस्थापक को जूते से पीटा

राजस्थान की राजनीति

दौसा (विष्णु आशीर्वाद)। दौसा जिले में लगातार कर्मचारियों को निशाना बनाकर मारपीट की जा रही है। बसवा में वनकर्मी के बाद जिले के आलूदा की ग्राम सेवा सहकारी समिति में कर्मचारियों के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। मारपीट की घटना कार्यालय में लगे सीसीटीवी में कैद हो गई है। मारपीट के बाद कार्रवाई की मांग को लेकर राजस्थान सहकारी कर्मचारी संघ ने बैठक आयोजित कर झंडू लाल मीणा व्यवस्थापक ग्राम सेवा सहकारी समिति आलूदा के साथ समिति कार्यालय में मारपीट, अभद्रता की गई है। इसमें समस्त समिति की व्यवस्थापक में रोष व्याप्त है। संघ के द्वारा सहकारी समिति कर्मियों की सुरक्षा एवं आपराधिक प्रवृत्तियों को अंजाम देने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही की मांग को लेकर केंद्रीय सरकारी बैंक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक को ज्ञापन प्रस्तुत कर कार्रवाई की मांग की है। अगर कार्रवाई नहीं हुई तो समिति कर्मचारियों द्वारा कार्य का बहिष्कार की चेतावनी दी है।इस दौरान जिला अध्यक्ष रमेश चंद्र भारद्वाज, जिला उपाध्यक्ष शिवचरण गुर्जर,मीडिया प्रभारी रामदास स्वामी,तहसील अध्यक्ष दीनदयाल मीणा, मुकेश कुमार सहित राजस्थान सहकारी संघ कर्मचारी संघ की पदाधिकारी मौजूद रहे।

दो लाख की नगदी सहित आभूषण पार, मामला दर्ज, नदबई क्षेत्र के गांव गादौली की घटना

ग्रामीणों ने एक संदिग्ध को पकडकर पुलिस को सौपा

राजस्थान की राजनीति

नदबई। लखनपुर थाना क्षेत्र के गांव गादौली में अज्ञात चोर एक मकान का ताला तोड़ करीब दो लाख की नगदी सहित लाखों रुपए के आभूषण चोरी कर ले गए। शोर शराबा होने पर ग्रामीणों ने एक संदिग्ध युवक पकडकर पुलिस को सौपा। हालांकि, पुलिस ने संदिग्ध युवक को शांतिभंग के मामलें में गिरफ्तार किया। बाद में पीडित कपूर जाटव ने पुलिस में मामला दर्ज कराया।

पुलिस के अनुसार गादौली निवासी पीडित कपूर जाटव पुत्र पूरन सिंह अपने परिजनों के साथ कमरें में सो रहा। इसी दौरान

आरोपी संजय जाटव पुत्र नेमीचंद अपने दो अन्य साथियों के साथ कमरें में घुस गया। बाद में अलमारी में रखे करीब दो लाख की नगदी सहित लाखों रुपए के आभूषण व अन्य सामान चोरी कर ले गया। पीडित के शोर मचाने पर समीपवर्ती लोगों ने पीछा कर एक संदिग्ध युवक संजय जाटव को पकडकर पुलिस को सौपा। बाद में पीडित ने संदिग्ध आरोपी संजय जाटव सहित दो अन्य पर चोरी की घटना को अंजाम देने का आरोप लगाते हुए पुलिस में मामला दर्ज कराया।

उधर, गुरुवार देर रात लखनपुर थाना क्षेत्र के गांव पींगोरा राजकीय महात्मा गांधी सीनियर विद्यालय के कक्ष का ताला तोड़ अज्ञात चोर एलईडी सहित अन्य सामान चोरी कर ले गया। विद्यालय कक्ष का ताला टूटा मिलने व एलईडी सहित अन्य सामान गायब होने पर विद्यालय प्रधानाचार्य ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज कराया।

भरतपुर में सीआईडी टीम पर हमला, ग्रामीणों ने लाठी-सरियों से पीटा, गाड़ी में आग लगाने की कोशिश

राजस्थान की राजनीति

भरतपुर। जिले से एक मामले की जांच के लिए पहुंची सीआईडी टीम पर हमले की खबर सामने आई है। मिली जानकारी के अनुसार जांच को पहुंची टीम पर ग्रामीणों ने लाठी और सरियों से हमला कर दिया। इस दौरान टीम में शामिल कुछ लोगों को चोट भी आई है। आक्रोशित ग्रामीणों ने सीआईडी टीम की गाड़ी में आग लगाने की कोशिश भी की। मामले की जानकारी सामने आते ही पुलिस छानबीन में जुट गई है। बताया गया कि भरतपुर जिले के भुसावर थाने के पथेना गांव में सीआईडी की टीम जांच के लिए पहुंची थी। टीम सादा वर्दी में थी। जहां उन पर हमला कर दिया गया।

आरोपी को लेकर गांव से निकलते तभी किया हमला

बताया गया कि सीआईडी की टीम एक फौजी की जांच के लिए पहुंची थी। सीआईडी की टीम ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। लेकिन वो उसे लेकर गांव से निकलते इससे पहले आरोपी के परिजन और ग्रामीणों ने उन पर हमला कर दिया। लोगों ने टीम को बंधक बना लिया। इस मारपीट में सीआईडी टीम का ड्राइवर और एक कांस्टेबल जख्मी हो गया है। जबकि मारपीट के बीच मौका देखकर आरोपी भी फरार हो गया।

सीआईडी की 5 सदस्यीय टीम जांच करने पहुंची थी

दरअसल सीआईडी की 5 सदस्यीय टीम शनिवार को भुसावर थाना क्षेत्र के पथेना गांव में फौजी संजय जाट को गिरफ्तार करने पहुंची थी। इसी दौरान आरोपी के परिजनों व ग्रामीणों ने बंधक बनाकर जांच दल में शामिल लोगों के साथ मारपीट की। सूचना पर पहुंची भुसावर पुलिस ने सीआईडी टीम को लोगों के कब्जे से छुड़ाया। जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए अस्पताल लाया गया।

भुसावर थाने में मामला दर्ज, पुलिस कर रही जांच

घटना के सम्बन्ध में पीड़ित सीआईडी जॉन भरतपुर टीम के सीआई रूपनारायण मीणा ने भुसावर पुलिस थाने में मामला दर्ज कराया है। भुसावर थाना प्रभारी सुनील गुप्ता ने बताया है कि सीआईडी जॉन भरतपुर की 5 सदस्यों की टीम इंस्पेक्टर रूप नारायण मीणा, सब इंस्पेक्टर मोहन बंसल, कांस्टेबिल केहरी, वीरेंद्र व कांस्टेबल चालक राधे के साथ गांव पथेना में फौजी संजय जाट के घर पहुंची। टीम ने जब संजय जाट के घर पूछताछ व तस्दीक के बाद फौजी को टीम के साथ चलने को कहा तो फौजी संजय जाट के घरवालों ने टीम पर हमला बोलकर उनके साथ मारपीट शुरू कर दी और टीम को बंधक बनाकर फरार हो गए।

थाना प्रभारी सुनील गुप्ता ने बताया है कि सीआईडी जॉन भरतपुर की टीम फौजी संजय जाट की संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी तस्दीक के लिये आई थी। इस दौरान टीम पर हमला कर उनको घायल कर दिया। अनुसंधान दर्ज कर आरोपियों की तलाश की जा रही है।

प्रधानमंत्री मोदी के साथ लगातार तीसरी बार लोकसभा पहुंचेंगे ओम बिरला

राजस्थान की राजनीति

दबलाना/सुरेंद्र गौत्तम। राजस्थान में लोकसभा चुनाव के लिए मतदान हुए एक सप्ताह से अधिक का समय बीत चुका है। सभी चौक चौराहों व चाय की चौपालों पर लोग बीजेपी कांग्रेस की हार जीत को लेकर अलग-अलग कयास लगाते नजर आ रहे हैं। कोई भाजपा की जीत सुनिश्चित होने की बात कह रहा है तो कोई इस बार बदलाव की बयार होने की बात कह रहा है। इन सभी चर्चाओं के बीच भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष रामबाबू शर्मा ने कोटा बूंदी लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी का परचम लहराने की बात कही है। भाजपा नेता रामबाबू शर्मा ने दावा किया कि कोटा बूंदी लोकसभा में भाजपा प्रत्याशी लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला लाखों वोटो से चुनाव जीत कर

लगातार तीसरी बार लोकसभा पहुंचेंगे। रामबाबू शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ क्षेत्रीय प्रत्याशी ओम बिरला भी लोक सभा चुनाव में जीत की हैट्रिक लगाने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के लोगों ने देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर रखने के लिए नरेंद्र मोदी को फिर से भारत का प्रधानमंत्री चुनने हेतु बढ़-चढ़कर भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान किया है। शर्मा ने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के कार्यकाल में कोटा बूंदी संसदीय क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास कार्य हुए हैं और क्षेत्र के विकास को गतिमान रखने के लिए मतदाताओं ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को भरपूर आशीर्वाद दिया है। जिसके बूते ओम बिरला लाखों वोटो से चुनाव जीत कर लोकसभा पहुंचेंगे।

भ्रूण लिंग परीक्षण पर होगी सख्त कार्रवाई-डिप्टी सीएमएचओ डॉ गुर्जर

जिले में सोनोग्राफी सेंटर्स का सघन निरीक्षण शुरू

भ्रूण लिंग परीक्षण पर संपूर्ण रोक के लिए चलाया जा रहा अभियान

राजस्थान की राजनीति

दौसा (विष्णु आशीर्वाद)। भ्रूण लिंग परीक्षण पर पूर्णतः रोक के लिए पीसीपीएनडीटी अधिनियम की सख्ती से पालना सुनिश्चित करने की दृष्टि से प्रदेश में चलाए जा रहे सघन निरीक्षण अभियान की कडी में दौसा जिले में भी सोनोग्राफी सेंटर्स का सघन निरीक्षण अभियान शुरू कर दिया गया है। डिप्टी सीएमएचओ (प.क.) डॉ महेन्द्र सिंह गुर्जर ने बताया कि अभियान के तहत पूरे जिले के राजकीय और निजी सोनोग्राफी सेंटर्स की औचक निरीक्षण किया जाएगा। इस कडी में उपखंड महवा और मंडावर के सीएचसी मंडावर, रोहित हॉस्पिटल,

गोयल हॉस्पिटल, वेदांश हॉस्पिटल, माया देवी हॉस्पिटल, सिटी हॉस्पिटल, कौशल्या हॉस्पिटल पर संचालित सोनोग्राफी सेंटर्स का औचक निरीक्षण किया गया। सेंटर्स पर निरीक्षण के दौरान समुचित प्रोटोकॉल की जांच की गई और आवश्यक दिशा निर्देश भी जारी किए गए। कनिष्ठ सहायक टीकम सिंह भी इस मौके पर उनके साथ थे। निरीक्षण के दौरान डॉ गुर्जर ने कहा कि सोनोग्राफी के दौरान गर्भवती महिला की चिकित्सकीय परीक्षण रिपोर्ट के साथ उसका आधार कार्ड या पहचान का दस्तावेज आवश्यक रूप से जमा किया जाना अनिवार्य है और सोनोग्राफी कराने का कारण भी स्पष्ट होना जरूरी है। इसकी रिपोर्ट नियमानुसार सीएमएचओ कार्यालय भिजवाना अति आवश्यक है। किसी भी प्रकार की अनियमितता पाए जाने पर सेंटर्स पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। यदि किसी सोनोग्राफी सेंटर पर भ्रूण लिंग जांच पाई जाती है या कन्या भ्रूण हत्या का मामला पाया जाता है तो इसे आपराधिक गतिविधि माना जाएगा और कानूनी कार्रवाई भी अमल में लाई जएगी। उन्होंने बताया कि आमजन भी भ्रूण लिंग परीक्षण की सूचना टोल फ्री नंबर 104 या 108 पर दे सकता है या फिर 9799997795 पर वाट्सएप कर सकता है। सूचना सही पाए जाने पर सूचना देने वाले को पीसीपीएनडीटी की मुखबिर योजना के तहत तीन लाख रूपए तक के नगद प्रात्साहन राशि दी जाती है तथा सूचना देने वाले की पहचान गुप्त रखी जाती है।

राजकीय विद्यालय में छात्राओ को किया साईकिलो का वितरण

33 छात्राओ को मिली साईकिले, खिले चेहरे

राजस्थान की राजनीति

कोटकासिम (चेतराम सैनी)। सरकार की योजना के अनुसार कक्षा 9वीं में अध्यनरत छात्राओ को निःशुल्क साईकिल वितरण योजना के तहत शनिवार को राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय के प्रांगण में साईकिल वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्यसतीश कुमार बाघोरिया ने बताया की विद्यालय में अध्यनरत 33 छात्राओ को निःशुल्क साईकिलो का वितरण किया गया। जिसके तहत गत वर्ष वंचित रही 14 छात्राओ को तथा 9वीं कक्षा में अध्यनरत 19 छात्राओ को साईकिलो का वितरण किया गया। योजना के तहत कुल 33 छात्राओ को साईकिल वितरण किया गया। साईकिले पाकर छात्राओ के चेहरे खिल उठे। साईकिल वितरण कार्यक्रम के दौरान पूर्व पंचायत समिति सदस्य राजेन्द्र उर्फ नागा, काशी नम्बरदार, अशोक अग्रवाल, व्याख्यता बिहारीलाल मीणा, शीशराम वर्मा, रामानन्द शर्मा, हेमराज प्रजापत, हीरालाल जाट, नीरज वर्मा, सुनिल कुमार, व्याख्यता मीनू, सुनिता, पूनम सहित काफी संख्या में सामाजिक कार्यकर्ता सहित विद्यालय स्टाफ एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

भीषण गर्मी में मूक प्राणियो के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करना सबसे बडा पुण्य का कार्यः सूठवाल

राजकीय विद्यालय के प्रांगण में लगाये परिंडे

राजस्थान की राजनीति

कोटकासिम (चेतराम सैनी)। शनिवार को क्षेत्र के गांव गंगापुरी के राजकीय प्राथमिक विद्यालय में सामाजिक कार्यकर्ताओ द्वारा भीषण गर्मी के मौसम को देखते हुए मूक प्राणियो के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करने के साथ ही विद्यालय प्रांगण में परिंडे लगाये तथा अन्य सार्वजनिक स्थानो पर परिंडे लगाने के साथ ही परिंडो में नियमित रूप से पानी डालने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर समाजसेवी अरविंद सूठवाल ने मौजूद ग्रामीणो एवं युवाओ से कहा की गर्मी के ऐसे मौसम में जल ही जीने का आधार बना हुआ है। अतः हम सभी को मिलकर इस अभियान में जगह-जगह छायादार पेडो, छतो एवं सार्वजनिक स्थानो पर परिंडे लगाकर उनमें नियमित दाना पानी डालने का निश्चय कर पुण्य के भागीदारी बने। इस अवसर पर विद्यालय प्रधानाध्यापक ईश्वर सिंह, अध्यापक निंरजन, आंगनबाडी कार्यकर्ता अंजू, मुकेश देवी सहित विद्यालय के विद्यार्थी मौजूद रहे।

श्री कृष्ण और सुदामा की मित्रता संसार के लिए है आदर्श -विष्णु भारद्वाज (कथा व्यास)

राजस्थान की राजनीति

दबलाना/सुरेंद्र गौतम। हिंडोली के गणेश बावड़ी मंदिर परिसर में आयोजित सप्त दिवसीय श्रीमद भागवत के अंतिम दिवस पर कथा व्यास विष्णु भारद्वाज ने कृष्ण सुदामा की मित्रता का वर्णन करते हुए कहा कि आदर्श मित्रता में विश्वास , समर्पण और त्याग की भावना निहित होती है। स्वार्थ की भावना के आधार पर किसी भी संबंध को स्थाई नही रखा जा सकता। कृष्ण सुदामा की मित्रता संसार के लिए आदर्श बताया साथ ही गुरु महिमा का भी वर्णन किया । गुरु ही सच्चे मार्गदर्शक होते है जो शिष्य को संसार के विषय से हटाकर भक्ति और उपासना के मार्ग पर लगाते हैं । गुरुसेवा समस्त साधनों का सार है । भगवान की कथा कलियुग के समस्त दोषों को नष्ट करके जीवन को आनंद मय बनाती है। कथा विश्राम के बाद आरती ,मंत्र, पुष्पांजलि की गई जिसके पश्चात प्रसाद वितरण हुआ। इस दौरान आयोजक मोहनलाल शर्मा , नरेंद्र शर्मा , कवींद्र शर्मा,लक्ष्मी कांत शर्मा, आयुष शर्मा, वैभव शर्मा , वासु शर्मा सहित कई श्रद्धालु उपस्थित रहे।

डॉक्टर ने सल्फास की गोलियां खा कर सुसाइड किया

जोधपुर

सीनियर रेजिडेंट डॉक्टर ने अपने घर में सल्फास की गोलियां खा कर सुसाइड कर लिया। उनकी प%ी उन्हें अस्पताल ले गई जहां इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। बताया जा रहा है परिवार में प्रॉपर्टी के विवाद के कारण उन्होंने यह कदम उठाया। उनके छोटे भाई ने उनपर संपत्ति हड़पने का मामला भी दर्ज करवा रखा था। मामला जोधपुर के शास्त्री नगर थाना इलाके का है। शास्त्री नगर थानाधिकारी देवेंद्र सिंह देवड़ा ने बताया कि मेडिकल कॉलेज के पीएसएम विभाग में कार्यरत सीनियर रेजिडेंट तरुण कुमार (48) अपनी प%ी के साथ डीआरडीए कॉलोनी में रहते थे। शुक्रवार रात सल्फास खाने से तबीयत खराब होने पर प%ी एमडीएम हॉस्पिटल लेकर गई, जहां तबीयत बिगड़ने से मौत हो गई। डॉ. तरुण के दोस्तों ने बताया कि तीन दिन पहले ही उन्होंने अपना बर्थडे मनाया था। वह मूल रूप से भीनमाल के रहने वाले थे। उनकी प%ी जोधपुर में ही रक्षा प्रयोगशाला में वैज्ञानिक हैं। बताया जा रहा है कि तरुण और उनके छोटे भाई जगदीश के बीच संपत्ति को लेकर विवाद चल रहा है। 28 अप्रैल को भीनमाल थाने में इसी विवाद को लेकर डॉक्टर तरुण और उनके एक भाई नरपत के खिलाफ छोटे भाई जगदीश ने मामला भी दर्ज करवाया है। रिपोर्ट में जगदीश ने बताया कि उनकी दो बेटियां ही है। उनके दो भाई डॉ. तरुण और नरपत उनकी पुश्तैनी संपत्ति को हड़पना चाहते हैं। इस मामले के दर्ज होने के बाद से डॉ. तरुण तनाव में थे।

भगवान श्रीराम के खिलाफ की टिप्पणी, 5 गिरफ्तार

पाली

पाली में भगवान श्रीराम के खिलाफ गलत कमेंट करने और उसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल करने के मामले में हिन्दू संगठनों ने विरोध जताया। शनिवार को कंटालिया गांव में बाजार बंद करवाया और चौकी के बाद धरना दिया। मुकदमा दर्ज होने और पांचों आरोपियों को गिरफ्तार करने के बाद धरने से उठे और बाजार खुल सका। दरअसल हुआ यूं कि कंटालिया गांव के ही पांच लोग चुनावी चर्चा कर रहे थे। इनमें से ललित नाम का युवक भगवान श्रीराम के खिलाफ टिप्पणी करने लगा। एक लड़के ने रोका और कहा कि वीडियो बना दूंगा फिर भी वह नहीं रूका। बाद में यह वीडियो इनमें से किसी ने वायरल कर दिया। इसके विरोध में शनिवार को विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल के लोगों ने कंटालिया का बाजार बंद करवाया और कंटालिया चौकी के बाहर धरने पर बैठ गए और आरोपियों को गिरफ्तारी की मांग की। पुलिस अधिकारियों की समझाइश के बाद भी वे धरने से नहीं उठे। बाद में पांचों आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने और उन्हें फिलहाल शांति भंग में गिरफ्तार करने की जानकारी पुलिस ने दी तब जाकर मामला शांत हुआ। कंटालिया चौकप्रभारी ने बताया कि मामले में कंटालिया गांव निवासी ललित पुत्र बाबूलाल मौर्य, गजेन्द्र पुत्र बाबूलाल, मगाराम पुत्र उम्मेदराम, विजयकुमार पुत्र भीकाराम और श्रवण कुमार पुत्र अनोपराम को गिरफ्तार किया।

13 लाख रूपए की धोखाधड़ी करने का आरोपी गिरफ्तार

सवाई माधोपुर

सवाई माधोपुर की कोतवाली थाना पुलिस ने 13 लाख रूपए की धोखाधड़ी के मामले में डेढ वर्ष से एक फरार आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के ऊपर जिला पुलिस की ओर से दस हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया था। आरोपी रमेश चंद बैरवा पुत्र सुखजी निवासी ढाणी किशनपुरा को पुलिस की विशेष टीम ने जयपुर से गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ पूर्व में भी धोखाधधड़ी कई मामले दर्ज है। कोतवाली थानाधिकारी राजवीर सिंह ने बताया कि नरेन्द्र पुत्र राजेश बैरवा निवासी चन्द्रपुरा रणथम्भौर रोड़ किशनपुरा मे खातेदार सतीश बैरवा की जमीन को 2 दिसम्बर 2021 ो 10 लाख रूपए मे खरीद थी। खातेदार ने जमीन का विवाद होने पर उसी जमीन को आरोपी रमेश चन्द्र बैरवा को 24 जनवरी 2022 को बेच कर रजिस्ट्री करवा दी। आपसी समझौता होने आरोपी रमेश चन्द्र बैरवा को नरेन्द्र बैरवा के नाम 13 लाख रूपए का एसबीआई बैक का चैक देकर कोर्ट से मुकदमा मे राजीनामा के आधार डिकरी रमेश के पक्ष मे करवा ली गई, लेकिन नरेन्द्र ने 13 लाख रूपए के चैक को बैक मे लगाया तो चैक की राशि मे आरोपी रमेशचन्द के खाते मे नही होने के कारण वापस लौटा दिया गया। इस पर नरेन्द्र बैरवा की रिपोर्ट पर थाना कोतवाली पर मामला दर्ज कर अनुसंधान स्द्ध सोसाई सिंह सहायक उप निरीक्षक द्वारा किया गया। मामला दर्ज होने के बाद से रमेश चंद्र बैरवा फरार चल रहा था ।

चलते लोडिंग ऑटो में लगी आग, नकदी सहित जेवरात खाक

बूंदी

बूंदी के लबान क्षेत्र में शनिवार दोपहर को कोटा से बसवाड़ा जा रहे एक लोडिंग ऑटो में अचानक आग लग गई। हादसे में ऑटो में रखे शादी के सामान के सहित जेवरात भी आग की चपेट में आ गए। सड़क से गुजर रहे राहगीरों ने ऑटो ड्राइवर को हादसे की सूचना दी तब उसे पता चला, लेकिन तब तक आग भड़कने से सामान जलकर राख हो गया। लाखेरी उपखंड के पापड़ी रेलवे फाटक और लबान रेलवे स्टेशन के बीच चलते हुए लोडिंग आटा में आग भभक उठी। ऑटो में ड्राइवर सहित एक अन्य व्यक्ति सवार था। आग इतनी तेजी से भड़की कि उस पर काबूं नहीं पाया जा सका। आग की चपेट में आने ऑटो में रखा शादी का सामान जलकर खाक हो गया। आसपास में काम कर रहे लोगो ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहे। बाद में लाखेरी से पहुंची दमकल ने आग पर काबू पाया। बसवाड़ा निवासी रूपचंद सैनी अपने भतीजे की शादी के लिए कपड़े और अन्य सामान कोटा से खरीद कर ला रहे थे। ऑटो में दुल्हा-दुल्हन के कपड़े सहित पहरावणी के कपड़े थे। इसके अलावा करीब डेढ़ लाख रुपए नकद और सोने चांदी के जेवर एक बैग में रखे थे। सारा सामान आग की भेंट चढ़ गया। रूपचंद कोटा रहता है और शादी के सिलसिले में सामान लेकर अपने पैतृक गांव बसवाडा जा रहा था। परिवार के अन्य सदस्य बाइक पर थे जो आगे निकल गये थे। रूपचंद सैनी ने बताया कि उसके भतीजे की शादी है। इसके चलते रविवार को गांव मे उसकी सगाई होनी थी।

जमीनी विवाद में दो पक्षों के महिला-पुरुष भिड़े, लाठी-पत्थरों से एक दूसरे पर वार किया, 5 घायल

गोविंदगढ़

जमीनी विवाद में दो पक्ष आपस में भिड़ गए। क्या महिलाएं क्या पुरुष, जिसके हाथ में जो लगा उसी से एक दूसरे पर हमला कर दिया। घटना में दोनों पक्षों के 5 लोग घायल हुए हैं। घायलों को गोविंदगढ़ के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। जहां से एक महिला को गंभीर हालत में अलवर के जिला अस्पताल रेफर कर दिया, जहां उसका इलाज जारी है। मामला शुक्रवार शाम 5.30 बजे अलवर के गोविंदगढ़ थाना इलाके के जहानपुर क्षेत्र का है। शनिवार सुबह दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर पत्रिकाद्वय दर्ज दर्ज करवाई है। पूरी घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर आया है। वीडियो को लेकर गोविंदगढ़ थानाधिकारी मुकेश कुमार मीणा से बातचीत करने की कोशिश की गई तो उन्होंने मामले पर बात करने से इनकार कर दिया। जानकारी के अनुसार, झगड़े में एक पक्ष के खेमचंद (43) पुत्र रामजीलाल, रामजीलाल (65) पुत्र भिक्कन, कविता (37) प%ी खेमचंद, ओमप्रकाश (37) पुत्र रामजीलाल घायल हो गए। वहीं दूसरे पक्ष में परवीना (40) प%ी शाहजहां घायल हो गई। घटना के बाद जहानपुर गांव में पुलिस तैनात कर दी गई है। जानकारी के अनुसार, पहले दिसंबर 2023 में इसी जमीन को लेकर विवाद हुआ था। इसके बाद तत्कालीन एसडीएम सुरेंद्र कुमार के द्वारा भूमि की पैमाइश कर निशानदेही की गई थी।

लेकिन एक पक्ष की ओर से फिर से पैमाइश की गुजारिश जा गई थी। इस दौरान खेत जोतने को लेकर विवाद हो गया। पहले पक्ष खेमचंद ने रिपोर्ट देकर बताया- उनका भूमि को लेकर मौलाना मुबीन से विवाद था। इसे लेकर 25 दिसंबर को भी उनके ऊपर हमला किया गया था। इसके बाद एसडीएम की मौजूदगी में भूमि पर निशान लगा दिए गए। इसके बाद शुक्रवार शाम 5:30 बजे के करीब किराए पर ट्रैक्टर मंगवाकर खेत जुतवा रहे थे। इस दौरान मुनफैद, आसिफ पुत्र अली मोहम्मद, मुबीन, इनामुल पुत्र जाकर, हमीद पुत्र सुबान खान, शरीफ खान और उनके साथ 20 से 30 लोग आ गए। मैंने उनसे हाथ जोड़कर कहा कि मुझे मेरा खेत जोतने दो, लेकिन उन लोगों ने मुझ पर और मेरे परिवार पर जानलेवा हमला कर दिया। इस दौरान मुबीन ने मेरे पैर पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया, जिससे मेरा पैर कट गया। बड़ी मुश्किल से परिवार की जान बचाकर अस्पताल लेकर आए। घायल ओमप्रकाश ने बताया-घटना का वीडियो बनाते समय आरोपियों ने उसने फोन छीन लिया।

दूसरे पक्ष ने कहा- भाभी पर हमला किया सिर फोड़ा

दूसरे पक्ष के मौलाना मुबीन अहमद ने बताया- वह मदरसे में बैठा हुआ था। इस दौरान उसे बाहर से शोर-शराबे की आवाज सुनाई दी। पूछा तो बच्चों ने आकर बताया कि खेमचंद और कुछ लोग बाहर रास्ते को जोत रहे हैं। मैंने बाहर निकलकर देखा तो वहां ट्रैक्टर चल रहा था। वहां मेरे भाई की बीवी परवीना खड़ी हुई थी, जो उन्हें समझ रही थी कि यहां पर पैमाइश की एप्लीकेशन लगी हुई है, पैमाइश होने के बाद इसे जोत लेना। अभी यहां पर मौलाना के अलावा कोई मौजूद नहीं है। लेकिन, मेरे वहां पहुंचने से पहले ही खेमचंद ने परवीना पर वार कर दिया और वह मौके पर ही गिर गई। जिसके सिर में चोट लगी और कान से भी खून आ गया। मैने तभी 100 नम्बर पर फोन कर दिया और वहां पुलिस आ गई। परवीना के गंभीर चोट होने की वजह से उसे अलवर रेफर किया गया है। घटना की जानकारी मिलने पर भाजपा नेता जय आहूजा गोविंदगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे और घायल से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने आरोपियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। फिलहाल पुलिस मामले को लेकर जांच कर रही है और इस मामले में कुछ भी बोलने से इनकार कर रही है।

शेयर मार्केट व्यापारी ने किया सुसाइड, मरने से पहले लिखा सुसाइड नोट

भीलवाड़ा

शहर में एक शेयर मार्केट से जुड़े व्यापारी ने एक महिला सहित दो पुरुषों की धमकियों से आकर परेशान होकर सुसाइड कर लिया । बताया जा रहा है कि 6 माह पूर्व पड़ोस में लड़ाई झगड़ा होने पर यह बीच बचाव करने गया था और उसके बाद उन्होंने इसके खिलाफ ही मामला दर्ज करा दिया। तब से इसे लगातार टॉर्चर किया जा रहा था ।शुक्रवार दोपहर जब ये घर पर अकेला था तो इसने अपने कमरे में फांसी का फंदा लगाकर सुसाइड कर लिया । घटना का पता 6 साल की बेटी को दोपहर बाद जब वो स्कूल से घर पहुंची तो उसने अपने पापा को फांसी के फंदे से लटका देखा और उसकी चीखने चिल्लाने की आवाज सुनकर पड़ौसी और कुछ दे में उसकी प%ी घर पर पहुंची और उसे हॉस्पिटल पहुंचाया । जहां डॉक्टर ने युवक को मृत घोषित कर दिया । मामला शहर के कोतवाली थाना क्षेत्र के आदर्श नगर का है । यहां रहने वाले अविनाश पिता बहादुर वर्मा (36) ने शुक्रवार दोपहर अपने घर पर फांसी का फंदा लगाकर जान दे दी । मरने से पहले अविनाश ने एक सुसाइड नोट लिखा है जिसमें अपनी मौत का जिम्मेदार राहुल सोनी , अखिलेश वैष्णव और मीनाक्षी सोनी को बताया है । मृतक अपनी प%ी और 6 साल की बच्ची के साथ रह रहा था । जिस समय इसने सुसाइड किया तब बच्ची स्कूल गई थी और प%ी घर के किसी काम से बाजार गई थी । बच्ची के स्कूल से लौटने पर उसने अपने पापा को फांसी के फंदे से लटका देखा । सूचना मिलने पर कोतवाली थाना पुलिस मौके पर पहुंची और मृतक के शव को फंदे से उतरवा महात्मा गांधी हॉस्पिटल की मॉर्च्यूरी में भिजवाया और मृतक के अहमदाबाद में रहने वाले पिता और भाई को सूचित किया ।

आज उनके भीलवाड़ा पहुंचने पर मृतक का पोस्टमार्टम किया गया । मृतक के भाई ने बताया कल मेरे भाई के साथ जो घटना हुई वो पहले भी हुई थी । कुछ आपसी झगड़ा चल रहा था । पड़ौसियों के झगड़े में वो बीच बचाव करने गया था और सारे आरोप लगा दिए गए । उसके बाद मामला खत्म हो गया था । फिर कल जो आरोपी था वो हमारे घर पर आया था । राहुल सोनी , अखिलेश वैष्णव और मीनाक्षी सोनी पहले जब झगड़ा हुआ तब भी यही लोग थे और कल भी राहुल सोनी ने घर पर आकर धमका के गया था और वीडियो कॉल करके वीडियो कॉलिंग में कह रहा था सबको जान से मार दूंगा । पड़ोसियों का कोई झगड़ा था छोटा-मोटा कोई झगड़ा था । यह बस समझाने गया था । ये लगातार मेंटली टॉर्चर हो रहा था । जो आरोपी हैं उन्हें सजा मिले और हमको न्याय मिले ।

दहेज के लिए 4 महीने की प्रेग्नेंट नवविवाहिता की हत्या, पांच महीने पहले हुई थी शादी

अनूपगढ़

चार महीने की गर्भवती महिला की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया है। पीहर पक्ष ने ससुराल वालों पर जहर देकर मारने का आरोप लगाया है। घटना से एक दिन पहले विवाहिता ने अपने पिता से फोन पर बात की थी। उसने कहा था- 'दहेज के लिए ससुराल वाले मुझे मार देंगे।' उसकी पांच माह पहले ही शादी हुई थी। घटना अनूपगढ़ जिले की रावला मंडी के गांव 3 केएचएम में 3 मई की है। डीएसपी अमरजीत चावला ने बताया कि संजू (23) की मौत के मामले में उसके भाई रविन्द्र ने तीन मई की शाम रावला मंडी पुलिस थाने में दहेज हत्या का मामला दर्ज करवाया है। घटना के बाद से ताया ससुर भागीरथ फरार है।

ससुराल वालों पर जबरन कीटनाशक पिलाने का आरोप

अमरजीत चावला ने बताया कि गांव 4 केपीडी की रहने वाली संजू की शादी 6 दिसम्बर 2023 को 3 केएचएम के निवासी राजकमल पुत्र कृष्णलाल बिश्नोई के साथ हुई थी। वह चार महीने की गर्भवती थी। तीन मई को सुबह उसकी तबीयत बिगड़ने पर ससुराल वाले रावला के सरकारी हॉस्पिटल लेकर गए, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। महिला के पीहर पक्ष ने ससुराल वालों पर जबरन कीटनाशक पिलाकर मारने का आरोप लगाकर रिपोर्ट दर्ज करवाई है। पोस्टमॉर्टम के बाद शव पीहर पक्ष को सौंपा दिया है। मृतका के भाई रविन्द्र (20) पुत्र संतोष कुमार

बिश्नोई ने बताया कि तीन मई को सुबह करीब नौ बजे संजू के ससुराल के ही गांव के निवासी शिवकुमार ने फोन कर बताया कि कीटनाशक के कारण संजू की तबीयत बिगड़ गई थी। उसे रावला हॉस्पिटल लेकर गए हैं। भाई ने बताया कि बहन के ससुर कृष्ण लाल, ताया ससुर भागीरथ और ताई सास सरस्वती ने बहन से एक बाइक और 10 लाख रुपए की मांग की थी। पांच दिन पहले वह अपने मायके आई थी और दहेज की मांग के बारे में बताया था। इसके बाद पंचायत की गई। पंचायत में ससुराल पक्ष के लोगों को समझाकर संजू को वापस ससुराल भेज दिया। रविंद्र ने बताया कि संजू के पति राजकमल संजू का हमेशा ध्यान रखते थे और उसका सहयोग करते थे। राजकमल अपने पिता के साथ खेती का काम करता था।

ट्रक ने ट्रैक्टर ट्रॉली के मारी टक्कर, 14 घायल, 5 घायल टोंक और एक घायल जयपुर रैफर

टोंक

टोंक-सवाई माधोपुर नेशनल हाइवे पर अलीगढ़ थाना क्षेत्र में शनिवार अल सुबह ट्रैक्टर ट्रॉली के पीछे से ट्रक ने टक्कर मार दी। इससे ट्रक चालक, खलासी के अलावा ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार 14 जने घायल हो गए। घायलों में महिला-पुरुष और बच्चे भी शामिल हैं। यह हादसा अलीगढ़ में शुक्रवार रात को रिश्तेदार की शादी में भात भरकर वापस ट्रैक्टर ट्रॉली से उनियारा लौटते समय शनिवार अल सुबह हुआ। इसकी सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पहुंची और सभी घायलों को उनियारा अस्पताल लेकर गई। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद ट्रक चालक-खलासी समेत छह जनों को टोंक रेफर कर दिया। इनमें से भी एक जने की हालत खराब होने पर उसे जयपुर रेफर किया है। अलीगढ़ थाना प्रभारी सुरेश कुमार चौधरी ने बताया कि ट्रैक्टर ट्रॉली के पीछे ट्रक आ रहा था, सामने से एक बोलेरो आई। उसकी लाइट में ट्रक चालक को ट्रैक्टर ट्रॉली दिखाई नहीं दी और ट्रैक्टर ट्रॉली के पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। इससे इससे ट्रक चालक, खलासी और ट्रैक्टर- ट्रॉली में सवार 14 जने घायल हो गए। सभी घायलों का इलाज करवाया गया है। अलीगढ़

थाने के हैड कांस्टेबल भंवर लाल ने बताया कि शुक्रवार को उनियारा के माली परिवार के करीब 20-25 महिला-पुरुष, बच्चे रिश्तेदार की शादी में गए थे। जहां से कार्यक्रम खत्म होने के बाद शनिवार अल सुबह करीब पौने चार बजे ट्रैक्टर ट्रॉली में सवार होकर वापस अपने गांव उनियारा लौट रहे थे। इसी दोरान डींग के बालाजी के पास टोंक- सवाई माधोपुर रोड पर पीछे से आ रहे ट्रक ने ट्रॉली के जोरदार ट्रक के टक्कर मार दी। टोंक से भी चौथमल माली की हालात खराब होने से जयपुर रेफर किया है।

17 लाख के लिए भाई को मार डाला, खून साफ कर कपड़े को जलाया

बीकानेर

17 लाख के लिए युवक ने अपने छोटे भाई की हत्या कर दी। आरोप है कि सिर पर लोहे की पाइप से वार किया। इसके बाद खून से सने उसके कपड़े उतारे और दूसरे कपड़े पहनाए। ताकि किसी को शक न हो। भाई की बॉडी को घर के आंगन में रख दिया। सुबह घरवाले जागे तो कहने लगा कि नशे के कारण मौत हुई है। इतना ही नहीं, उसके अंतिम संस्कार की भी तैयारी थी। इतने में पड़ोसी ने पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस ने आरोपी बड़े भाई को गिरफ्तार कर लिया है। मामला बीकानेर के खाजूवाला का है।

प्लॉट की रकम में हिस्सा नहीं दिया

एसपी तेजस्विनी गौतम के अनुसार, हरविन्द्र सिंह (40) की हत्या के आरोप में उसके भाई नरेंद्र सिंह (45) को गिरफ्तार किया गया है। हरविन्द्र खाजूवाला के 3 केजेडी का रहने वाला था। हरविन्द्र की प%ी कर्मजीत कौर अपने पीहर रह रही है। उसने जेठ नरेंद्र सिंह, जेठानी वीरपाल? कौर और जेठूते (जेठ का बेटा) अंगद पर पति की हत्या का आरोप लगाया है। ?कर्मजीत ने पुलिस को बताया कि पति तीन? केजेडी में टेलरिंग का काम करता था।? ढाई साल पहले अनूपगढ़ (बीकानेर) में जेठ ने 17 लाख रुपए में प्लॉट बेचा था। यह प्लॉट हरविन्द्र और नरेंद्र दोनों के नाम पर था। नरेंद्र ने प्लॉट की रकम अपने पास रख ली। हरविन्द्र ने अपना हिस्सा मांगा। नरेंद्र ने फूटी कौड़ी देने से इनकार कर दिया। इसको लेकर लड़ाई भी होती थी। इसी बीच, जेठ-जेठानी ने

मिलकर कर्मजीत को घर से निकलवा दिया। मजबूरी में कर्मजीत अपने पीहर चली गई। एसपी तेजस्विनी गौतम ने बताया- गुरुवार रात करीब 2 बजे की घटना है। शुक्रवार दोपहर पुलिस को सूचना मिली। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्यारे लाल शिवरान टीम के साथ मौके पर पहुंचे थे। नरेंद्र सिंह ने बताया कि नशे की ओवरडोज के कारण मौत हुई है। पुलिस ने हरविन्द्र की मां से भी पूछताछ की। उन्होंने बताया कि बेटा रात दस बजे घर आ गया था। अपने कमरे में सो गया था। रात को उसने कोई नशा नहीं किया था। शक होने पर कॉन्स्टेबल जोधाराम व चालक रेशम सिंह ने घर की तलाशी ली। प्लास्टिक की थैली में खून से सने कपड़े मिल गए। पुलिस ने नरेंद्र सिंह से सख्ती से पूछताछ की। उसने कबूल किया कि उसका अपने भाई हरविन्द्र से झगड़ा हो गया था।

नाबालिग से छेड़छाड़ के आरोपी को 3 साल जेलः 2 बार मासूम के साथ की थी गलत हरकत

जोधपुर

नाबालिग के साथ छेड़छाड़ के मामले में कोर्ट ने सख्ती अपनाते हुए आरोपी को 3 साल के कठोर कारावास की सजा दी साथ ही 2 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। जुर्माना अदा नहीं करने पर 15 दिन का अतिरिक्त कठोर कारावास की सजा का आदेश दिया है।

4 साल पहले की थी छेड़छाड़

पॉक्सो कोर्ट के जस्टिस ने मामले में सुनवाई के बाद सजा के आदेश दिए। दरअसल, 2020 में पार्षद के चुनाव के प्रचार के समय नाबालिग के साथ छेड़छाड़ हुई थी। बच्ची के चिल्लाने पर उसके परिवार को पता चला और आरोपी की पिटाई की। बच्ची ने अपनी नानी को अपने साथ हुई छेड़छाड़ के बारे में बताया तब उसकी नानी ने थाने में मामला दर्ज करवाया। विशिष्ट लोक अभियोजक पॉक्सो कोर्ट, शिव प्रकाश भाटी ने बताया कि न्यायाधीश डॉ. सूर्य प्रकाश पारीक, विशेष

न्यायालय, पॉक्सो कोर्ट, जोधपुर महानगर ने आरोपी को नाबालिग बालिका के साथ की गई छेड़छाड़ के मामले में 03 वर्ष का कठोर कारावास और दो हजार रुपए के जुर्माने से दण्डित किया गया।

पहले भी बेड टच कर चुका आरोपी

24 अक्टूबर को पीड़िता की नानी ने पुलिस कमिश्नरेट, जोधपुर महानगर के एक पुलिस थाना में लिखित रिपोर्ट पेश कर बताया था कि 24 अक्टूबर को रात्रि साढ़े सात बजे पार्षद चुनाव का प्रचार हो रहा था। भीड़ में उसकी 10 वर्ष की दोहिती के साथ बेड टच किया। उसकी दोहिती के चिल्लाने पर उसके भाई व मोहल्ले के लोग आ गए और बच्ची को छुड़ाया। ऐसी ही घटना आरोपी पहले भी बच्ची के साथ कर चुका है। तब पिटाई कर हिदायत दे कर छोड़ दिया था। थाने द्वारा मुकदमा दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया। इसके बाद आरोपी को यौन अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम के तहत न्यायालय में पेश किया गया। अभियोजन पक्ष की ओर से शिवप्रकाश भाटी, विशिष्ट लोक अभियोजक ने न्यायालय में 16 मौखिक साक्ष्य व 17 दस्तावेजी साक्ष्य पेश किए और बहस कर बताया कि पीड़िता एक नाबालिग बालिका है जिसके साथ आरोपी द्वारा छेड़छाड़ का अपराध किया है जिसे कठोर सजा दी जाए। न्यायालय ने दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद आरोपी को 3 वर्ष के कठोर कारावास और दो-दो हजार रुपए के जुर्माने से दण्डित किया गया। जुर्माना अदा नहीं करने पर 15 दिन का कठोर कारावास की सजा अतिरिक्त सजा भुगतने का आदेश दिया।

दो चरण के चुनाव के बाद प्रचार अभियान विकासात्मक और रचनात्मक मुद्दों से भटक कर आरक्षण, संविधान, वोट जिहाद, तुष्टिकरण, पाकिस्तान आदि जैसे अनुत्पादक व विभाजनकारी प्रलापों पर केंद्रित हो गए हैं। भाजपा नीत राजग जहां अपने चार सौ पार नारे को चरितार्थ करने के लिए मतदाताओं को लुभाने के लिए पूरी ताकत लगा रहा है, वहीं कांग्रेस नीत 'इंडिया' भाजपा व मोदी को शिकस्त देने के लिए हर वो पैंतरे अपना रहा है, जो भविष्य में देश की समावेशी फिजा की रंगत बदल सकते हैं। इंडिया के घटक दल सपा नेता मारिया आलम खां की तरफ से जिस तरह वोट जिहाद लफ्ज़ का इस्तेमाल हुआ है, उससे लगता है कि पीएम नरेंद्र मोदी को हराने के लिए इंडी गठबंधन के नेता किस हद तक जा सकते हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी अपने भाषणों में लोगों को डराते हैं कि 'मोदी सरकार आई तो संविधान बदल जाएगा, आरक्षण खत्म हो जाएगा', जबकि यह सरासर झूठ है। कांग्रेस धर्म के आधार पर आरक्षण देने का शिगूफा छोड़ रही है, जबकि संविधान में धर्म आधारित आरक्षण का प्रावधान नहीं है और अतीत में सुप्रीम कोर्ट ने भी इस विचार को खारिज किया है। आखिर विपक्ष की ओर से वोट जेहाद जैसी खतरनाक अपील क्यों की जा रही है? कांग्रेस, सपा या इंडी गठबंधन की ओर से इस अपील के विरोध में बयान क्यों नहीं आए? क्या चुनाव विभाजनकारी, तुष्टिकरण आदि मुद्दों पर ही लड़ा जाएगा? विकास, भविष्य का भारत, एकता, अखंडता जैसे मुद्दों पर नहीं लड़ा जा सकता? चुनावी राजनीति में बदलाव पर रोशनी डालता आजकल का यह अंक...

वोट जेहाद से आरक्षण तक का शोर

विश्लेषण

सुशील राजेश

वरिष्ठ पत्रकार

आजकल अमेरिका में जेहाद की गूंज है। भारत में भी आम चुनाव का मौसम है, व यहां भी जेहाद की गर्मी घोल दी गई है। लोकसभा के लिए मतदान के चरण जारी हैं, लेकिन उप्र में समाजवादी पार्टी का एक चेहरा मारिया आलम खां ने 'वोट जेहाद' के जरिए मुसलमानों का आह्वान किया है। मारिया ने मौजूदा सत्ता के प्रति जिन शब्दों का इस्तेमाल किया है, वे बेहद नफरती और आपत्तिजनक भी हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में जो आतंकी हमले किए गए हैं या जेहाद के नाम पर जो कत्लेआम, लहूलुहान जारी रहा है, उसे 'धर्मयुद्ध' किस तरह कहा या माना जा सकता है? गृहमंत्री अमित शाह ने सार्वजनिक तौर पर स्पष्ट किया है कि चुनाव के बाद जो मोदी सरकार बनेगी, वह इस मामले में उचित कार्रवाई करेगी।

दुनिया के सबसे प्राचीन लोकतंत्र अमेरिका और सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में आजकल जेहाद की गूंज है। संदर्भ और कारण अलग-अलग हैं। अमेरिका के संदर्भ में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि अमेरिका में जेहाद नहीं चाहिए। अमेरिका में यूनिवर्सिटी का इस्लामीकरण नहीं होना चाहिए। कुछ यूनिवर्सिटी ऐसी हैं, जिनके परिसरों में युवा शक्ति गाजा के फिलिस्तीनियों के पक्ष में आंदोलित है। वे हमास जैसे आतंकी संगठन के समर्थक या प्रतिनिधि हो सकते हैं। आश्चर्य है कि गाजा के मुसलमानों के हालात और इज़रायल के हमलों पर अधिकतर इस्लामी देश अब खामोश हैं, लेकिन अमेरिका की यूनिवर्सिटीज में आंदोलन जारी हैं। माइक पर नमाज पढ़ी जा रही है। परिसरों में नौजवानों ने तंबू तक गाड़कर अवरोधक खड़े कर लिए हैं। करीब 2300 छात्रों को गिरफ्तार करना पड़ा है। यह अमेरिका के लोकतंत्र की संस्कृति नहीं है। इन आंदोलनों को खत्म किया जाना चाहिए। हमने देखा है कि जब यूरोप ने जेहाद के लिए अपने दरवाजे खोले, तो क्या हुआ? पेरिस, लंदन में देख लो। वे अब पहचानने लायक नहीं हैं। हम अमेरिका के साथ ऐसा नहीं होने देंगे। हमारे पास अविश्वसनीय संस्कृति और परंपरा है। ये आंदोलन नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव का मुख्य मुद्दा बन सकते हैं। आखिर अमेरिका में जेहाद की गूंज क्यों है?

चुनाव का मौसम

भारत में भी आम चुनाव का मौसम है, लेकिन उसमें भी जेहाद की गर्मी घोल दी गई है। लोकसभा के लिए मतदान के चरण जारी हैं, लेकिन उप्र में समाजवादी पार्टी का एक चेहरा मारिया आलम खां ने 'वोट जेहाद' के जरिए मुसलमानों का आह्वान किया है। वह पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी हैं। संपन्न और शिक्षित परिवार से हैं। फिर भी इतनी सांप्रदायिक और देश-विरोधी सोच की हैं, उनका आह्वान सुनकर हैरानी हुई। मारिया समाजवादी पार्टी की जिला उपाध्यक्ष हैं। उन्होंने एक चुनावी जनसभा में कहा- 'बहुत अक्लमंदी के साथ, बहुत जज़्बाती न होकर, बहुत खामोशी के साथ, एक साथ होकर वोटों का जेहाद करो। हम सिर्फ वोटों का जेहाद ही कर सकते हैं और इस संघी सरकार को भगाने का काम कर सकते हैं।' जेहाद के इस आह्वान ने सियासत में उबाल पैदा कर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक को प्रतिक्रिया देनी पड़ी, लेकिन उन्होंने कांग्रेस के हिस्से ही दर्ज कर दिया। मारिया ने मौजूदा सत्ता के प्रति जिन शब्दों का इस्तेमाल किया है, वे बेहद नफरती और आपत्तिजनक भी हैं। हालांकि सलमान खुर्शीद ने सार्वजनिक तौर पर मारिया को न तो भतीजी माना और न ही जेहाद के बयान को कबूल किया। अलबत्ता उन्होंने कहा कि वास्तविकता से इस कथित जेहाद का कोई संबंध नहीं है। ऐसे जेहाद हमारे देश में स्वीकार्य भी नहीं हैं। दरअसल सवाल है कि क्या भारत में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि के अलगाववादी आह्वानों पर ही चुनाव कराए जा सकते हैं? चुनाव आपसी सौहार्द और भाईचारे के भाव के साथ नहीं हो सकते? भारत तो संवैधानिक तौर पर 'पंथनिरपेक्ष' देश है। इस तरह जेहाद की बात करना आपराधिक मानसिकता है। मारिया जैसे लोग चाहते हैं कि एक-एक मुसलमान घर से निकले और अपने तय मुस्लिम उम्मीदवार के पक्ष में ही वोट सुनिश्चित करे।

लोकतंत्र के खिलाफ

चुनाव में हिन्दू-मुसलमान होने ही क्यों चाहिए? मुसलमानों को देश के संसाधनों पर भी पहला हक चाहिए। सरकारी नौकरियों, शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी ठेकों, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी आरक्षण चाहिए। कांग्रेस 2009 से अपने चुनाव घोषणा पत्रों में ऐसे आरक्षण या समान अवसर मुहैया कराने का आश्वासन देती आ रही है। उससे पहले भी ऐसी ही सोच रही होगी, लेकिन हमने खंगाल कर नहीं देखा। यह दीगर है कि मई, 2014 से कांग्रेस केंद्रीय सत्ता के बाहर है, लेकिन वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के पर्सनल लॉ, पोशाक, खान-पान और वक़्फ़ के वर्चस्व को भी पूरी स्वतंत्रता दिए जाने की सुनिश्चित घोषणा कर चुकी है। क्या अब देश में 'शरिया कानून' भी लागू रहेगा? वोट के नाम पर जेहाद किस तरह होगा, किसी ने भी स्पष्ट नहीं किया। कमोबेश कांग्रेस ने 'वोट जेहाद' का खंडन नहीं किया है। जेहाद किस लोकतंत्र का हिस्सा या पर्याय है? मैंने भारत में आतंकवाद के नाम पर भी जेहाद सुना है। देश के विभिन्न हिस्सों में जो आतंकी हमले किए गए हैं या जेहाद के नाम पर जो कत्लेआम, लहूलुहान जारी रहा है, उसे 'धर्मयुद्ध' किस तरह कहा या माना जा सकता है? मारिया के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करना ही पर्याप्त नहीं है। उनके खिलाफ देश-विरोधी गतिविधियों वाले कानून में मुकदमा चलाया जाना चाहिए। विडंबना और दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम भारत में कभी 'लव जेहाद' सुनते हैं, तो कभी 'लैंड जेहाद' के नारे बुलंद किए जाते हैं। 'मुस्लिम आरक्षण' पर भी अदालतों के खिलाफ जेहाद बोला जा सकता है, क्योंकि सबसे ताज़ा स्थापना अदालत की ही है कि धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं दिया जा सकता। प्रधानमंत्री मोदी ने 'वोट जेहाद' को लोकतंत्र के खिलाफ माना है, लिहाजा उन्होंने मुस्लिम तुष्टिकरण पर कांग्रेस से तीन लिखित गारंटियां मांगी हैं। बेशक चुनाव के संदर्भ में सभी बिरादरियों की बात होनी चाहिए, लेकिन करीब 20 करोड़ की आबादी वाले मुस्लिम समुदाय के लिए जेहाद का आह्वान करना 'असंवैधानिक' है, उन्हें भड़काने, उकसाने की सियासत है, जो कमोबेश भारत में अस्वीकार्य और दंडनीय है।

आरक्षण पर लोग आशंकित

लगता है कि अब विकास, भारत सरकार की प्रमुख उपलब्धियां, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत और उसके प्रधानमंत्री की विराट और वैश्विक हैसियत और तीसरे स्थान की आर्थिक महाशक्ति बनने सरीखे मुद्दे तो नेपथ्य में चले गए हैं, अथवा प्रसंगवश बन गए हैं, लेकिन मुसलमान और आरक्षण एक राष्ट्रीय, चुनावी मुद्दा बन गया है! चूंकि आरक्षण सीधा संविधान और दलित, पिछड़ों, आदिवासियों, गरीब सवर्णों से जुड़ा मुद्दा है, लिहाजा ग्रामीण स्तर पर भी लोग चिंतित होने लगे हैं कि क्या देश का संविधान बदल दिया जाएगा? क्या संविधान के बाद आरक्षण की व्यवस्था भी समाप्त कर दी जाएगी? यह कांग्रेस और सहयोगी दलों की पहली चुनावी सफलता लगती है कि फिलहाल संविधान और आरक्षण पर लोग आशंकित हो रहे हैं। फिलहाल भाजपा देश के कटघरे में लगती है, क्योंकि उसे ही जनता को पूरी तरह आश्वस्त करना है कि संविधान किसी भी स्थिति में बदला नहीं जाएगा। आरक्षण यथावत जारी रहेगा और धर्म के नाम पर मुसलमानों को आरक्षण नहीं दिया जाएगा। जिन्होंने दलित, पिछड़ों, आदिवासियों के आरक्षण में सेंधमारी कर व्यवस्था बदलने की कोशिश की है, उसे खारिज किया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी अपने संबोधनों में देश को भरोसा दिलाने की कोशिशों में जुटे हैं।

कांग्रेस के आरोप

दरअसल संविधान और आरक्षण की यह बहस भाजपा सांसदों-अनंत हेगड़े और लल्लू सिंह-के बयानों से शुरू हुई थी कि 400 पार के नारे और लक्ष्य के मकसद क्या हैं? उसी के आधार पर कांग्रेस ने आरोप चस्पा करने शुरू किए कि प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा-संघ 400 सीटों का जनादेश इसलिए मांग रहे हैं, ताकि संसद में पर्याप्त बहुमत के जरिए संविधान बदला जा सके और आरक्षण भी समाप्त किया जा सके। कांग्रेस के आरोप रहे हैं कि भाजपा-संघ की बुनियादी सोच आरक्षण-विरोधी है। यह मान्यता ही मिथ है। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा के प्रचारक नेताओं के आरोप हैं कि पिछड़ों के आरक्षण की आड़ में कांग्रेस की कर्नाटक सरकार ने मुसलमानों को ही 'पिछड़ा' घोषित कर उन्हें आरक्षण दिया है। ओबीसी कोटे में मुसलमानों को जिस तरह 4 फीसदी आरक्षण दिया गया है, वह असंवैधानिक है। गृहमंत्री अमित शाह ने सार्वजनिक तौर पर स्पष्ट किया है कि चुनाव के बाद जो मोदी सरकार बनेगी, वह इस मामले में उचित कार्रवाई करेगी। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी और जामिया मिल्लिया यूनिवर्सिटी में दलितों, आदिवासियों और ओबीसी को आरक्षण क्यों नहीं दिया जाता, इस संदर्भ में भी सरकार संवैधानिक कार्रवाई करेगी।

सवाल यह भी

सवाल यह भी है कि संविधान और आरक्षण के मुद्दों पर प्रधानमंत्री को भी आक्रामक होकर जवाब देना पड़ रहा है, लिहाजा प्रथम चरण के मतदान के बाद उन्होंने अपनी जुबां, भाषा और तेवर बदल लिए हैं। आजकल प्रधानमंत्री राम मंदिर, काशी, ब्रज, रामनवमी, हनुमान चालीसा, मंगलसूत्र और हिन्दू-मुसलमान सरीखे मुद्दों पर वोट मांग रहे हैं। अलबत्ता प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 10-साला कार्यकाल के दौरान अधिकतर विकास और 5वीं से तीसरी वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंततः 'विकसित भारत' की बात कही है। इस बार का जनादेश भी वह 'विकसित भारत' का संकल्प हासिल करने की रूपरेखा तैयार करने को मांगते रहे हैं। प्रधानमंत्री कांग्रेस और उसके शहजादे की गतिविधियों पर ज्यादा टिप्पणी करने लगे हैं। हालांकि अनुभव के आधार पर आकलन है कि तीसरी बार भी प्रधानमंत्री मोदी ही बनेंगे। बेशक 400 का आंकड़ा हासिल हो या नहीं। उप्र, राजस्थान, हरियाणा आदि हिन्दी पट्टी के कुछ राज्यों में जनादेश के आंकड़े कुछ कम हो सकते हैं, लेकिन अन्य राज्यों के जनादेश चौंकाऊ होंगे। संविधान 74 साल के बाद भी पंथनिरपेक्ष रहा है और रहेगा, बेशक संसद में 100 से अधिक संशोधन जरूर पारित किए गए हैं। आरक्षण पर संविधान पीठ का निर्णय है, जिसे कोई भी सरकार लांघ नहीं सकती। चुनाव कुछ बेलगामी पर भी लड़े जाते रहे हैं।

वोट जेहाद की अपील खतरनाक सोच

दो टूक

अवधेश कुमार

वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक

वर्तमान लोकसभा चुनाव में अल्पसंख्यक केंद्रित राजनीति और उससे जुड़े विषय निश्चित रूप से एक बड़ा मुद्दा बन चुका है। यह पहला चुनाव है जहां हमने नई शब्दावली वोट जेहाद सुनी है। यह शब्द भाजपा या उसके समर्थकों ने प्रयोग नहीं किया है। लव जेहाद, लैंड जेहाद आदि शब्द अवश्य हिंदुत्व समूह की ओर से आए, लेकिन वोट जेहाद आईएनडीआईए के मंच से एक प्रमुख परिवार की मुस्लिम महिला बोल रही है तो इसे हल्के में नहीं ले सकते। वरिष्ठ कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद की भतीजी मारिया आलम खां ने समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए इस शब्द का प्रयोग किया। सलमान खुर्शीद सहित कई नेता मंच पर मौजूद थे। किसी ने भी वोट जेहाद शब्द पर आपत्ति प्रकट नहीं की। तो इसे क्या माना जाए? क्या यह कहा जाएगा कि एक महिला ने भाजपा के विरुद्ध गुस्से में बोल दिया, इसलिए उसे गंभीरता से नहीं लिया जाए? आप उनका भाषण सुनिए, कितनी परिपक्वता और गंभीरता से वह एक-एक शब्द का प्रयोग कर रही हैं। क्या गुस्से में भी जेहाद शब्द का प्रयोग इस तरह किया जाना चाहिए था? इस्लाम में जेहाद का अर्थ काफी बड़ा है। जेहाद के नाम पर मुसलमान अपनी जिंदगी भी खत्म कर सकते हैं। इस तरह मारिया आलम ने इस चुनाव को मुसलमानों के लिए जेहाद बनाने की कोशिश कर दी। यानी यह एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया हो सकती है, लेकिन अगर आप मुसलमान हैं तो आपके लिए यह जेहाद ही है, क्योंकि सामने इस्लाम और मुसलमान का दुश्मन है जिसे सत्ता से उखाड़ फेंकना है। दुनियाभर में इस्लामी आतंकवाद के मूल में जेहाद का ही विचार है। आतंकी जेहाद के नाम पर ही खून फैला रहे हैं। यह बयान डराने वाला है, क्योंकि मारिया की चुनावी बात कुछ सिरफिरों ने मान लिया तो वे किसी सीमा तक जा सकते हैं।

विचार करना आवश्यक

यह विचार करना आवश्यक है कि आखिर इस तरह की भावना कहां से पैदा हुई? क्या यह भाजपा को लेकर मुसलमानों की सामूहिक सोच की अभिव्यक्ति है? यह समाचार आता रहा है कि किसी मोहल्ले में अगर कोई मुस्लिम व्यक्ति या परिवार ने भाजपा को वोट दे दिया तो पता चलने पर उसके साथ अनेक समस्याएं खड़ी हुईं, कहीं-कहीं उसे मोहल्ला छोड़कर भागना पड़ा, उसके साथ खाना-पीना तक बंद कर दिया गया। यहां मारिया ने भी यही बात की। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत शर्म आती है, जब मैंने सुना कि कुछ मुस्लिमों ने भाजपा प्रत्याशी मुकेश राजपूत के साथ मीटिंग की। उनका समाज से हुक्का पानी बंद कर देना चाहिए। इतना मतलबी मत बनो कि बच्चों की जिंदगियों से खेलो, हमारे बच्चों की जानों से खेलो। बताओ आज कितने लोग सीएए-एनआरसी के मामलों में जेलों में बंद हैं। मुझे खुशी हो रही है कि उन बच्चों के कितने केस सलमान खुर्शीद साहब मुफ्त में लड़ रहे हैं, जो बहुत बड़ी बात है। ये पंक्तियां बताती हैं कि वर्तमान राजनीति, भाजपा और चुनाव को लेकर मुसलमानों के अंदर किस तरह की सोच पैदा हुई है। सीएए अभी लागू हुआ है, एनआरसी आया भी नहीं, फिर इनमें किसी को जेल क्यों और कब हो गई? मारिया ने सार्वजनिक मंच से बोला इसलिए हमारे सामने वोट जेहाद शब्द आ गया। ऐसा संभव नहीं कि यह एक ही व्यक्ति की सोच हो और केवल उसी ने अभिव्यक्त किया हो। देश में बने वातावरण को देखते हुए यह मानने में कोई हर्ज नहीं है कि वोट जेहाद का

मामला अंतर्धारा के रूप में मुसलमानों में व्याप्त कराने की कोशिश पूरे भारत में हो रही होगी। आपको ऐसे वीडियो मिल जाएंगे जिसमें कोई मौलाना कह रहे हैं कि वोट को दीन से अलग मत मानना। यानी आपके लिए मजहब इस्लाम की रक्षा का ही प्रश्न है। यह भी कहा जा रहा है कि अगर मस्जिद में इमाम ने वोटिंग पर बोल दिया तो उसे दीन से अलग मानना मत। ऐसे विचार प्रकट किया जा रहे हैं मानो इस्लाम का अस्तित्व बचाने के लिए भाजपा के विरुद्ध वोट करना है।

हर तरह की कोशिश

इसमें भाजपा के लिए ऐसी सोच एवं व्यवहार के विरुद्ध आक्रामक होना स्वाभाविक है। राजनीति में यह कोशिश तो कांग्रेस सहित आईएनडीआईए के सारे घटकों की है कि मुसलमानों के अंदर भाजपा और नरेंद्र मोदी सरकार के विरुद्ध ऐसा वातावरण बना दिया जाए कि एक भी वोट उधर न जाए। उसके लिए हर तरह के हथियार प्रयोग किया जा रहे हैं। कांग्रेस ने घोषणा पत्र में मुसलमान शब्द प्रयोग नहीं किया है। इसके बावजूद अल्पसंख्यकों के लिए अलग से अध्याय डाला गया तो इसके मायने क्या हैं? उन अध्यायों में चतुराई से सार्वजनिक नौकरियों से लेकर अन्य जगह प्रतिनिधित्व, आर्थिक सामाजिक विकास, समाज की मुख्यधारा में लाने, उनकी सहमति से पर्सनल लॉ में सुधार को प्रोत्साहित करने की बातें हैं। अगर प्रधानमंत्री सहित समूची भाजपा कांग्रेस पर मुसलमानों को आरक्षण देने की तैयारी का आरोप लगा रही है तो उसे निराधार नहीं कहा जा सकता। कांग्रेस भाजपा पर चुनाव के सांप्रदायिककरण का आरोप लगाती है, लेकिन स्पष्ट नहीं करती कि उसके एजेंडा में मुसलमानों को अलग से आरक्षण देना शामिल है या नहीं। पहले कांग्रेस कर्नाटक से आंध्र तक ऐसा कर चुकी है और रंगनाथ मिश्र आयोग के द्वारा केंद्र में भी मंशा जता चुकी है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम मुस्लिम समाज के अगुवा माने जाने वाले लोगों के वक्तव्यों एवं कांग्रेस सहित अन्य पार्टियों की कृपा से लोकसभा चुनाव का पूरा माहौल मुस्लिम समर्थक एवं विरोधी का बना दिया गया है।

खतरनाक सोच का विरोध

मुस्लिम आरक्षण के प्रयास का या वोट जेहाद का विरोध मुस्लिम मुद्दे या मुसलमानों का विरोध नहीं है। कांग्रेस या आईएनडीआईए पर प्रश्न उठाना भी मुसलमानों का विरोध नहीं हो सकता। यह पर्टियों की मुस्लिम राजनीति तथा कुछ मुस्लिम नेताओं की खतरनाक सोच का विरोध है। भाजपा की पहले की केंद्र सरकार हो या वर्तमान, इस्लाम विरुद्ध या मुसलमान के हितों के विरुद्ध एक नीति सामने नहीं है। इसके उलट 9 वर्षों में सरकारी नौकरियों में प्रतिनिधित्व दोगुना से अधिक हुआ है। सिविल सेवाओं में रिकॉर्ड संख्या में मुसलमान आ रहे हैं। केंद्र और भाजपा राज्य सरकारों के कल्याण कार्यक्रमों एवं सामाजिक विकास संबंधी योजनाओं का लाभ जनसंख्या के अनुपात में मुसलमानों को ज्यादा मिला है। योजना या कार्यक्रम में कोई नहीं कह सकता कि मजहब के आधार पर भेदभाव होता है। मजहब के आधार पर मुस्लिम आरक्षण को खत्म करना हो या इसका विरोध यह मुसलमानों का विरोध नहीं। आरक्षण जाति के आधार पर समाज में वंचित या पीछे रह गए लोगों के लिए संविधान में डाला गया। भले उसमें जाति शब्द नहीं है, लेकिन सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों की सूची में जाति ही है। इस्लाम में जब जाति नहीं तो उन्हें पिछड़ी जाति या अनुसूचित जाति-जनजाति की श्रेणी में कैसे लाया जा सकता है? एक साथ तीन तलाक के विरुद्ध कानून न इस्लाम विरोधी है न मुस्लिम विरोधी। अनेक मुस्लिम देशों ने इसे समाप्त कर दिया है। यह शरिया या हदीस के नाम पर पुरुष समाज की विकृति रही है। क्या आतंकवादियों की गिरफ्तारी और उनको सजा दिलाना किसी मजहब के विरुद्ध माना जाएगा? अगर ऐसा माहौल बनाया गया है कि मोदी सरकार मुसलमानों और इस्लाम की विरोधी है, यह वापस आ गई तो भारत से इस्लाम खत्म हो जाएगा, नमाज बंद हो जाएगी, मस्जिदें छीन जाएंगी और इसके विरुद्ध जेहाद आवश्यक हो गया है तो देश को इसे गंभीरता से लेना ही पड़ेगा। यह सोच और व्यवहार खतरनाक है। कोई विवेकशील व्यक्ति खासकर वो, जो भारत से प्रेम करते हैं, इसकी एकता अखंडता बनाए रखना चाहते हैं इसे स्वीकार नहीं कर सकते।

तुष्टिकरण की राजनीति विनाशकारी

वोट जेहाद

रविशंकर

वरिष्ठ पत्रकार

देश में चुनावी माहौल अपने चरम पर है। दो चरणों के चुनाव के बाद सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की बातें भी होने लगी हैं। चुनाव प्रचार में आरक्षण का मुद्दा भी चर्चा में है। जिस तरह से मुसलमानों के आरक्षण का मुद्दा उछला है उससे कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। कांग्रेस शासित कर्नाटक में चाहे बात 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारों की हो या मुस्लिम आरक्षण की या बात कांग्रेस के न्यायपत्र की हो। उसने सांप्रदायिकता के मुद्दे पर कांग्रेस को कटघरे में खड़ा कर दिया है। सवाल ये है कि इस चर्चा का आगाज किसने किया? चुनावी चर्चाओं में ये सवाल पूछा जाने लगा है कि आखिर चुनाव में राजनीति का सांप्रदायिकरण कौन कर रहा है? इसकी शुरूआत कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद की भतीजी व सपा नेता मारिया आलम की ओर से वोट जेहाद की बात कह कर की गई है। मारिया के बयान पर भाजपा ने 'इंडिया' गठबंधन को कटघरे में खड़ा किया। पाक के पूर्व मंत्री फवाद चौधरी ने राहुल गांधी के सपोर्ट में ट्वीट किया तो भाजपा ने कांग्रेस को घेर लिया। फवाद ने एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा था- राहुल ऑन फायर। इसके बाद इस लोकसभा चुनाव में भी पाक की एंट्री हो गई।

विवादित अपील

आपने 'लव जेहाद', 'लैंड जेहाद' के बारे में सुना होगा, लेकिन इस लोकसभा चुनाव में 'वोट जेहाद' की चर्चा जोरों पर है। बता दें, मारिया आलम सपा में हैं और अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों से वोट जेहाद करने की अपील की है। दरअसल, मारिया आलम फर्रुखाबाद लोकसभा सीट के लिए चुनाव प्रचार करने पहुंची थीं। उन्होंने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि संघी सरकार को हटाने के लिए बहुत अक्लमंदी के साथ एकजुट होकर, बहुत खामोशी से वोटों का जेहाद करो, क्योंकि हम सिर्फ वोटों का जेहाद कर सकते हैं। आरोप है कि मारिया ने ये बयान मुसलमानों को लामबंद करने के लिए दिया था। उनके इस बयान के बाद देश की चुनावी राजनीति गरमा गई है। बीजेपी हमलावर है। मारिया सलमान खुर्शीद परिवार से है, इसलिए उनके बयान को किसी कट्टर मुस्लिम नेता के बयान की तरह नहीं देखा जा सकता है। सलमान खुर्शीद परिवार की सदस्य से ऐसे जेहाद शब्द का प्रयोग अचरज पैदा कर रहा है। विपक्ष ने एक बार फिर सत्तासीन पार्टी को एक मौका दे दिया है। यही वजह है कि पीएम मोदी लगातार विपक्षी गुट 'इंडिया' पर तुष्टीकरण की राजनाति करने का आरोप लगा रहे हैं। मोदी ने तो कांग्रेस को लेकर यहां तक कह दिया कि अगर कांग्रेस

यदि सत्ता में आती है तो वे लोगों की संपत्ति लेकर मुसलमानों को बांट देगी। बीजेपी ने चुनावी जनसभा में लोगों को वोट जेहाद और लव-जेहाद के राजनीतिक अर्थ बता रही है। यहां तक कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी चुनावी रैलियों में कह रहे हैं कि कांग्रेस धर्म के आधार पर आरक्षण देना चाहती है। कांग्रेस की मंशा मुसलमानों को धर्म के आधार पर आरक्षण देने की है। पीएम मोदी ने कहा कि जब वे जिंदा है धर्म के आधार पर आरक्षण लागू नहीं होने देंगे।

वंचितों के लिए आरक्षण

भारत में आरक्षण की व्यवस्था संविधान के अनुच्छेद 16(4) के तहत की गई है, जिसमें कहा गया है कि राज्य सरकारें उन वर्गों को आरक्षण का लाभ दे सकती हैं, जिन्हें वे पिछड़ा मानती हैं। सामान्यतः आरक्षण सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित लोगों के लिए होता है, लेकिन कुछ राज्य सरकारों ने इसे धर्म के आधार पर लागू किया है। जिसमे विशेष रूप से आरक्षण मुस्लिमों को दिया जा रहा है। जिसका भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विरोध कर रहे है, जबकि अन्य विपक्षी दल और उनकी सरकारें इसे सामाजिक न्याय का नाम देकर, एससी, एसटी, ओबीसी और वंचित समाज के हक पर डाका डालने का काम कर रहे हैं। बहरहाल, इस बार चुनाव प्रचार में अब तक कई मुद्दे सामने आ चुके हैं। मोदी की गारंटी बनाम राहुल का न्याय चुनावी सभा में उछाले जा रहे हैं। जनवरी में लग रहा था कि अयोध्या में राममंदिर के मुद्दे पर चुनाव होगा, लेकिन अब ये मुख्य मुद्दा नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी ने जब कहा कि 370 हटाया है तो लोग 370 सीटें देंगे तब लगा कि ये एक मुद्दा होगा, लेकिन ये भी मुद्दा नहीं बना। विपक्षी पार्टियों के नेताओं के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियों की इतनी कार्रवाई के बावजूद भ्रष्टाचार का भी मुद्दा नहीं बना। भाजपा अपने विकास कार्यों को मुद्दा बनाने की कोशिश कर रही है।

भाजपा के घोषणापत्र में एक देश, एक चुनाव का वादा है और समान नागरिक संहिता का भी वादा है, लेकिन इसे भी केंद्रीय मुद्दा बनाकर चुनाव नहीं लड़ा जा रहा है। न तो हिंदुत्व की थीम है और न राष्ट्रवाद की और न प्रधानमंत्री मोदी की विश्व गुरु वाली छवि और मजबूत नेतृत्व का मुद्दा है। भाजपा के मुकाबले विपक्ष ने जरूर संविधान और लोकतंत्र बचाने का मुद्दा बनाया है या नागरिकों को बहुत सारी चीजें देने का भी वादा किया है, लेकिन भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दे चुनाव प्रचार के केंद्र में नहीं हैं।

मुद्दों से ध्यान हटा

इस चुनाव में एक बात ये देखने को मिल रही है कि कांग्रेस यदि लूज बॉल बीजेपी पर उछालती है तो वह बाउंड्री पार ही जाती है। भाजपा तो पहले से ही लव जेहाद को बड़ा मुद्दा बनाए हुए है। ऐसे में इंडिया का वोट जेहाद भाजपा के लिए एक लूज बॉल की तरह ही है। इंडी गठबंधन को वोट जेहाद जैसे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। वोट जेहाद जैसी अपील सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ावा देती है। यह लोकतंत्र के लिए खतरनाक बात है। भाजपा व पीएम मोदी का विरोध वोट जेहाद की अपील से करना सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देगा। विभाजनकारी सोच के साथ चुनाव लड़ना देश की एकता, अखंडता के लिए खतरा है। इंडि गठबंधन केवल और केवल सत्ता के लिए देश के सौहार्द से खिलवाड़ न करें।

एक नजर

मारवाड़ियों और प्रवासी राजस्थानियों में बढ़ा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का क्रेज

राजस्थान मे 90 सभाओं,रोड शो के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा दूसरे राज्यों में स्टार प्रचारक

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। राजस्थान में लोकसभा चुनाव की वोटिंग के बाद अब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भाजपा केंद्रीय नेतृत्व के निर्देशानुसार अलग-अलग राज्यों में दौरे कर लगातार चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। जिन राज्यों में बड़ी संख्या में प्रवासी राजस्थानी/मारवाड़ी रहते हैं, वहां खास तौर पर स्थानीय प्रत्याशियों द्वारा राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भेजने की मांग आ रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा 26 अप्रैल को दूसरे चरण के मतदान के बाद झारखंड के धनबाद, हजारीबाग, राँची एंव पश्चिम बंगाल के श्रीरामपुर ,कोलकाता उत्तर और दिल्ली में सभा, सम्मेलनों और रोड शो को सम्बोधित करने के साथ- साथ चुनाव प्रचार के लिए जा चुके हैं। इससे पहले वे गुजरात के बनासकांठा लोकसभा क्षेत्र में आने वाले पालनपुर में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में सभा कर चुके हैं।

मुख्यमंत्री शर्मा आगे तेलंगाना, गुजरात,हरियाणा,दिल्ली और महाराष्ट्र में चुनाव प्रचार के लिए जा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि प्रवासी राजस्थानी कई पीढ़ियों से पूर्वी एवं दक्षिणी राज्यों के कई लोकसभा क्षेत्रों में बड़ी संख्या में रहते आ रहे हैं और वहां स्थानीय समुदाय में भी उनकी खासी पैठ है।

फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट का तृतीय दीक्षांत समारोह आयोजित

विद्यार्थी अर्जित शिक्षा का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान में करें: राज्यपाल मिश्र

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। राज्यपाल और कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि विद्यार्थी अर्जित शिक्षा का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए करे। उन्होंने फुटवियर डिजायन के क्षेत्र में नवाचार अपनाते हुए इस क्षेत्र के उत्पादों के निर्यात से अर्थव्यवस्था के सुदृढीकरण का आह्वान किया। राज्यपाल मिश्र ने शनिवार को जोधपुर में फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट के तृतीय दीक्षांत समारोह में संबोधित करते हुए कहा कि उद्यमिता विकास जरूरी है। नई पीढ़ी नौकरी करने की सोच की बजाय रोजगार प्रदाता बने। उन्होंने नई शिक्षा नीति के आलोक में पाठ्यक्रम अपडेट किए जाने पर भी जोर दिया।

राज्यपाल ने कहा कि एफ.डी.डी.आई जोधपुर फैशन एवं फुटवियर तकनीक से जुड़ा एक महत्वपूर्ण संस्थान है। संस्थान का मुख्य ध्येय शिक्षा के साथ हस्तशिल्प कौशल को बढ़ावा देना है। विश्वभर में आज फुटवियर एवं फैशन उद्योग जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसे दृष्टिगत रखते हुए यह संस्थान भविष्य की दिशा तय करेगा। उन्होंने कहा कि इस संस्थान में फुटवियर एवं फैशन उद्योग से जुड़े विश्व के उत्कृष्ट एवं निपुण डिज़ाइनर तैयार हों। तथा प्रयास करे कि डिजाइनिंग के क्षेत्र में यह संस्थान उत्कृष्ट संस्थान बने।

राज्यपाल मिश्र ने कहा कि वैश्विक बाजार मांग के अनुरूप भारत इस क्षेत्र में अग्रणी बने यह हम सबका प्रयास हो। उन्होंने कहा कि संस्थान एथलेटिक और गैर एथलेटिक फुटवियर की श्रेणीवार बाजार मांग का अध्ययन कर फुटवियर उत्पादों के विकास के लिए नवाचार और नवीन तकनीकी शिक्षा का प्रबंधन करे, जिससे विद्यार्थी वैश्विक बाजार मांग के दृष्टिगत अपने आपको तैयार कर सकें। इससे पहले राज्यपाल ने संविधान की प्रस्तावना और मूल कर्तव्यों का वाचन करवाया। समारोह के दौरान राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने वर्ष 2022 एवं 2023 बैचलर इन डिजाइन, फुटवियर डिजाइन एंड प्रोडक्शन और फैशन डिजाइन में ओवरऑल टॉपर को तीन स्वर्ण पदक एवं कोर्स टॉपर को पांच रजत पदक प्रदान किए गए। समारोह में कुल 153 विद्यार्थियों को डिग्रियां वितरित गई। इनमें बैच 2022 बैचलर इन डिजाइन, फुटवियर डिजाइन एंड प्रोडक्शन के 16 विद्यार्थी एफडीडीआई गुना कैंपस के भी शामिल हैं। समारोह में फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट के मैनेजिंग डायरेक्टर कर्नल पंकज कुमार सिन्हा, कार्यकारी निदेशक अनिल कुमार, इंस्टीट्यूट का स्टाफ , विद्यार्थी, अभिभावक सहित आमजन उपस्थित रहे।

राजस्थानी प्रवासियों से कांग्रेस के पक्ष में मतदान की अपील

कांग्रेस सांसद नीरज डांगी ने कर्नाटक में किया प्रचार, मल्लिकार्जुन खरगे से मुलाकात भी की

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। कांग्रेस पार्टी के स्टार प्रचारक व राज्यसभा सांसद नीरज डांगी द्वारा राजस्थान प्रवासियों से कर्नाटक में कांग्रेस उम्मीदवार राधाकृष्णा के समर्थन में जनसम्पर्क कर कांग्रेस के पक्ष में मतदान करने की अपील की। सांसद नीरज डांगी ने शनिवार को पार्टी पदाधिकारी व विशेषकर प्रवासी राजस्थानियों के परिवारजनों और मित्रों से कांग्रेस उम्मीदवार राधाकृष्णा को अधिक से अधिक मतों से विजय बनाने की अपील की। लोकसभा क्षेत्र गुलबर्गा, कर्नाटक से कांग्रेस उम्मीदवार राधाकृष्णा के साथ जनसंपर्क किया एवं कर्नाटक सरकार के ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री प्रियांक खरगे के साथ प्रेस वार्ता में भी उपस्थित रहकर उन्होंने क्षेत्र के मतदाताओं को कांग्रेस को वोट देकर राज्य सरकार के साथ-साथ केंद्र में भी सरकार बनाने पर जोर दिया।

अमेरिकी संस्था नाडा के प्रतिनिमंडल का जयपुर दौरा

डॉक्टर्स से नशा मुक्ति और मानसिक स्वास्थ्य पर अनुभव किए साझा

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। नशा मुक्ति और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रहे चिकित्साकर्मियों की अमेरिकी संस्था नाडा का 20 सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल जयपुर दौरे पर आया। यह प्रतिनिधि मंडल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोध, ज्ञान व तकनीक के विषय पर आपसी चर्चा एवं सहयोग के लिए सिविल लाइंस स्थित गौतम हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर में शनिवार को चर्चा हेतु आए। अमेरिकन प्रतिनिधिमंडल की अध्यक्षा एंजिला ई मेक्सवेल और नाडा की निदेशक सिंथेनिया मोरेनो एवं प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों का अस्पताल की सीईओ राज्यश्री जी ने स्वागत किया। डॉ. शिव गौतम ने पिछले 13 वर्षों में अस्पताल द्वारा किए गए चिकित्सा मानसिक स्वास्थ्य के विषय में जन जागरण के क्षेत्र में किए गए नवाचारो एवं प्रकल्पो बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में शहर के गणमान्य चिकित्सक, गौतम हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर से संबद्ध एमिटी यूनिवर्सिटी, ज्ञान विहार यूनिवर्सिटी, और आईएसएस यूनिवर्सिटी के प्राध्यापकों, डॉ रमेश अरोड़ा, डॉ प्रद्युमन शर्मा ,डॉ. एन के लोहिया, डॉ. सचिन शर्मा और अस्पताल के चिकित्सकों ने चर्चा में भाग लिया।

नाडा की अध्यक्षा एंजेला और डायरेक्टर सिंथिया मौरेन सहित अन्य प्रतिभागियों ने इस बात की आवश्यकता जताई कि बहुत सारे प्रयोग जो भारत में किए जा रहे हैं, उनका अमेरिका में भी उपयोग किया जाना चाहिए।

पूर्व सीएम अशोक गहलोत सारंगपुर पहुंचे

इलेक्ट्रोल बांड दुनिया का सबसे बड़ा घोटाला: अशोक गहलोत

गहलोत ने कहा- जैसे ही बीजेपी की वॉशिंग मशीन में जाते है घोटाले, आरोपो की सफाई हो जाती है

राजस्थान की राजनीति

सारंगपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत शनिवार को सारंगपुर पहुंचे। मंच पर उनके साथ मध्य प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, रामेश्वर निखरा, दीपक जोशी, कुणाल चौधरी मौजूद रहे। गहलोत ने मंच से संबोधित करते हुए इलेक्ट्रोल बांड को दुनिया का सबसे बड़ा घोटाला बताया। उन्होंने आगे कहा कि दिग्विजय सिंह किसी परिचय के मोहताज नहीं है। 1977 में जब कांग्रेस के खिलाफ आंधी चल रही थी। इंदिरा गांधी तक चुनाव हार गई थी, लेकिन दिग्विजय सिंह जीते थे। हालत बहुत चिंताजनक हैं। इन्होंने दो करोड़ नौजवानों को नौकरी देने की, काले धन कि बात कि थी। ईडी आई सीबीआई आई, देश कि वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण के पति खुद कहते है कि इलेक्ट्रोरल बांड सबसे बड़ा घोटाला है। अब हालात यह हैं जैसे ही बीजेपी की वॉशिंग मशीन में जाते है घोटालो, आरोपो की सफाई हो जाती हैं। अजित पवार पर 70 हजार करोड़ के घोटाले का आरोप था। बीजेपी में गए दो दिन बाद वो मंत्री बन जाते हैं।

यह चुनाव संविधान बचाने का चुनाव

ज्यूडीशियल दबाव में है इलेक्शन कमीशन दबाव में है। लोगों में उत्साह नहीं है। मोदीजी भैंस पर आ गए। कह रहे हैं कि आपकी एक भैंस कांग्रेस ले लेगी, फिर कह रहे कांग्रेस जीतेगी तो पाकिस्तान बहुत खुश होगा। यह चुनाव संविधान बचाने का चुनाव है। उन्होंने कांग्रेस कि 5 गारंटी के बारे में विस्तार से समझाया और कहा कि मोदी जी का मेनिफेस्टो झूठ का पुलिंदा है। आप ऐसा व्यक्ति चुनकर भेजे कि पार्लियामेंट में आपकी आवाज बुलंद कर सके।

लोकतंत्र खतरे में है

अबकी बार 400 पार कि बातें कर रहे यह हवा हवाई बाते हैं, जो हालात है वो आपके सामने हैं, जीएसटी से लोग बर्बाद हो गए। लोकतंत्र खतरे में हैं मोदी कि गारंटी लोकतंत्र कि परम्परा के लिए हानिकारक है। यह लोग खतरनाक हैं इनके इरादे खतरनाक हैं।

सर्वाधिक बेरोजगारी है तो वो भारत में: जीतू पटवारी

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने 2024 और 2014 के नरेंद्र मोदीजी के भाषण आपको याद है की नहीं, वो कहते थे न खाऊंगा न खाने दूंगा, देश को विश्वगुरु बनाऊंगा, उनके वादों पर देश ने भरोसा किया। देश में कोरोना हुआ तो नरेंद्र मोदीजी ने कहा थाली बजाओ, पर देश उनपर भरोसा कर रहा था। दस साल बाद आज सर्वाधिक बेरोजगारी है तो वो भारत में है। राजस्थान के बांसवाड़ा से आई भगवती भील ने कहा कि आप उस समय कह रहे थे में भी चौकीदार, जब इतने चौकीदार थे तो पुलवामा इतना आरडीएक्स कहां से आया। उन्होंने कहा कि हमें 5 किलो अनाज नहीं चाहिए। हमें अपने छोटे छोटे बच्चो को पढ़ाना है, हमें रोजगार चाहिए।

कांग्रेस जुमलेबाजी नहीं करती जो कहती है वो करती है: रूबी खान

रूबी खान ने कहा की महिला शक्ति इस देश की धुरी है। राजा साहब की जीत उनेंकी अकेले की नहीं जनता की जीत होंगी। आपको अपनी ताकत दिखानी है। राजस्थान में 450 का मिलता था, 25 लाख तक का इलाज मुफ्त होता था। आज वो इतिहास हो गया। लेकिन कांग्रेस जुमलेबाजी नहीं करती जो कहती है वो करती है।

हमलावरों की गिरफ्तारी को लेकर मुख्यमंत्री और भाजपा विधायकों से मिले पत्रकार

राजस्थान की राजनीति

जयपुर (वसीम अकरम)। पिंकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह राठौड़ व जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के पदाधिकारियों ने शिवविलास होटल कूकस जयपुर में अग्निकांड की कवरेज करने गए दो पत्रकारों पर हमला करने वाले होटल के मैनेजर महेश शर्मा व अन्य होटल कर्मियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर शनिवार को मुख्यमंत्री व भाजपा विधायकों से मिले। मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री के ओएसडी आनंद शर्मा, विधायक गोपाल शर्मा व महेंद्र पाल मीना को प्रेस क्लब अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह राठौड़, जार के महासचिव भाग सिंह, जार जयपुर जिला अध्यक्ष जगदीश शर्मा ने ज्ञापन देकर बताया कि शिव विलास होटल कूकस में हुए अग्निकांड की कवरेज के लिए पत्रकार प्रवीण शर्मा, जीतू चौहान गए थे। वहां होटल मैनेजर महेश शर्मा व अन्य कर्मियों ने पत्रकार प्रवीण व जीतू चौहान को फोटो लेने, वीडियो बनाने से रोकने के लिए उनके मोबाइल छीन लिए। उनके साथ मारपीट की। फ़ोटो, वीडियो डिलीट कर दिए। इस दौरान जेब से पर्स निकाल लिया और सोने की चैन भी तोड ली। आमेर थाना पुलिस में नामजद मामला दर्ज करवाने के बाद भी आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया जा रहा है। दबाव में पुलिस कार्यवाही नहीं कर रही है।

जार ने उक्त मामले की निष्पक्ष जांच करवाते हुए हमलावर होटल मैनेजर महेश शर्मा व अन्य को गिरफ्तार किया जाए और दोषियों के खिलाफ चालान पेश किया। साथ ही हमलावरों द्वारा छीनी गई राशि, सोने की चैन व मोबाइल फोन बरामद किए जाए।

पिंकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष, जार पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री, भाजपा विधायक गोपाल शर्मा व महेंद्र पाल मीना से मिलकर हमलावर होटलकर्मियों की गिरफ्तारी की मांग की....

मावठा सरोवर में विशेष अभियान...

जयपुर में आमेर मावठा से निकाला 2 टन कचरा, 2 हजार लोगों ने 2 घंटे तक की सफाई

राजस्थान की राजनीति

सभी लोगों ने ली शहर को स्वच्छ रखने की शपथ

जयपुर। जयपुर को स्वच्छता सर्वेक्षण में नंबर वन बनाने के लिए नगर निगम हेरिटेज द्वारा हर संभव कोशिश की जा रही है। इसके तहत शनिवार को आमेर स्थित मावठा सरोवर में विशेष अभियान चलाया गया। इस दौरान 2 घंटे में 2000 लोगों ने मावठा सरोवर से 2 टन से ज्यादा कचरा इकट्ठा किया। इस दौरान नगर निगम के 1000 से ज्यादा अधिकारियों-कर्मचारियों के साथ ही सिंगर रविंद्र उपाध्याय और कनिका के साथ विभिन्न सामाजिक संगठनों और शैक्षणिक संस्थाओं के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। नगर निगम हेरिटेज आयुक्त अभिषेक सुराणा ने बताया कि हमारे प्राकृतिक जल स्त्रोत साफ और संरक्षित रहे। इसी उद्देश्य को ध्यान रखते हुए हेरिटेज निगम ने आमेर के मावठे में ये विशेष सफाई अभियान चलाया।

आमजन को चाहिए कि वे इन एतिहासिक धरोहरों की रक्षा करें और इन्हें स्वच्छ रखें। मावठा सरोवर में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करें। ये सभी के लिए नुकसानदायक है। हमारे इस अभियान में शहरवासियों ने प्लॉगिंग एक्टिविटी यानि मॉर्निंग वॉक करते हुए श्रमदान कर आमजन को स्वच्छता का संदेश दिया। सुराणा ने बताया कि हेरिटेज निगम आगे भी शहर के दूसरे प्राकृतिक जल स्त्रोत और ऐतिहासिक स्थलों पर साफ सफाई करेगा। उन्होंने बताया कि इस तरह से अभियान से लोगों के अंदर भी स्वच्छता के प्रति भावना जागृत होती है, जो ना सिर्फ हमारे शहर और प्रदेश बल्कि देश के लिए काफी जरूरी है।

दो घंटे में 2 टन से ज्यादा कचरा किया इकट्ठा

नगर निगम हेरिटेज कि अतिरिक्त आयुक्त रौनक बैरागी ने बताया कि सफाई अभियान में सिंगर रविन्द्र उपाध्याय और कनिका भी सभी की हौसला अफजाई के लिए मौजूद रहीं। लगभग 2 घंटे तक चले इस सफाई अभियान में करीब 2 हजार लोग मौजूद रहे। इस दौरान करीब दो टन से अधिक कचरा आमेर मावठा से इकट्ठा किया गया। बैरागी ने बताया कि आमेर में आयोजित सफाई अभियान में जयपुर व्यापार महासंघ, गोपाल जी का रास्ता व्यापार मंडल, मनिहारों का रास्ता व्यापार मंडल, जलमहल व्यापार मंडल, आमेर व्यापार मंडल, रामगढ़ रोड व्यापार मंडल, सी फॉर एनजीओ, होटल फैडरेशन ऑफ राजस्थान, क्लब महिंद्रा, सुबोध स्कूल, भूमि एनजीओ, ग्राम भारती समिति आमेर, नई उमंग एनजीओ, जलमहल के वेंडर्स, सुबोध कॉलेज एनएसएस टीम, कदंब कुंड एवं ताल कटोरा विकास समिति, महावीर इंटरनेशनल एनजीओ, जय भारत जन चेतना मंच, माधवी शिक्षा संस्था, जयपुर ग्राफर्स इंस्टाग्राम, एजुकेशन और कर्मचारी ग्रुप के साथ ही बड़ी संख्या में शहरवासी ने सफाई अभियान में अपना योगदान दिया।

शाह ने माना राजस्थान में बीजेपी की सीटें कम होंगी

एक-दो सीटों की हो सकती है कटौती; 400 सीटों पर बोले- नतीजे आने दीजिए, चौंक जाएंगे

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। राजस्थान लोकसभा चुनावों में बीजेपी की हैट्रिक पर केंद्रीय गृह मंत्री और पार्टी के सबसे बड़े रणनीतिकार अमित शाह ने ही सवाल उठा दिए हैं। अमित शाह ने एक टीवी इंटरव्यू में सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार किया है कि राजस्थान में सीटें कम होंगी। शाह ने कहा- राजस्थान में हमारी बहुत कम कटौती एक-दो सीटों की हो सकती है। लोकसभा चुनावों के रिजल्ट से पहले शाह के इस बयान को सियासी रूप से काफी अहम माना जा रहा है। 400 सीटों के सवाल के जवाब में शाह ने कहा- आप नतीजे आने दीजिए, चौंक जाएंगे। 400 का आंकड़ा आएगा। महाराष्ट्र में भी हम 40 के आस-पास सीट जीतेंगे, 41, 40 या 42 हो जाए। यही रिजल्ट रहेगा। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक हम शत प्रतिशत रिपीट करेंगे। राजस्थान में हमारी बहुत कम कटौती एक दो सीटों की हो सकती है। उत्तर प्रदेश में हम 5 से 7 सीट की बढ़ोतरी करेंगे। उड़ीसा में 16 के आस-पास जा सकते हैं। असम में भी 12 को क्रॉस करेंगे।

अमित शाह के बयान के मायने

अमित शाह के बयान से यह साफ हो गया है कि राजस्थान में 25 सीटें जीतने की हैट्रिक नहीं लगने वाली। पार्टी के पास ऊपर तक फीडबैक है कि पूरी 25 सीटें नहीं आएगी। राजस्थान के पहले फेज में जिस तरह वोटिंग गिरी। उसका नुकसान बीजेपी को हो सकता है। इस बार 25 सीटों पर 2019 के मुकाबले 4.57 प्रतिशत तक कम वोट पड़े हैं। पिछली बार 66.07 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। जो इस बार घटकर 61.57 प्रतिशत रह गई। बाड़मेर, बांसवाड़ा समेत तीन सीटों को छोड़कर किसी भी लोकसभा सीट पर 2019 से ज्यादा वोट नहीं पड़े।

बीजेपी ने लोकसभा चुनावों में 7 सीटों को कमजोर माना था

बीजेपी ने लोकसभा चुनावों के दौरान सात सीटों को कमजोर माना था। कमजोर मानी जाने वाली सीटों में दौसा, झुंझुनूं, बाड़मेर, चूरू, नागौर, सीकर, करौली-धौलपुर शामिल थी। पार्टी ने इन सीटों पर खूब फोकस किया था। पीएम नरेंद्र मोदी और दूसरे स्टार प्रचारकों की सभाएं करवाकर माहौल बदलने का प्रयास किया था। बीजेपी में इस बार बहुत सी सीटों पर भितरघात की भी संभावनाएं थीं। कई सीटों पर स्थानीय नेताओं की शिकायतें ऊपर तक पहुंची हैं।

शेखावाटी, मारवाड़ और पूर्वी राजस्थान में स्थानीय मुद्दे हावी रहे

बीजेपी के सामने इस बार शेखावाटी और पूर्वी राजस्थान चुनौती बना हुआ था। विधानसभा चुनावों के दौरान सीकर, चूरू, झुंझुनूं, नागौर, श्रीगंगानगर, बूंदी, धौलपुर में बीजेपी का प्रदर्शन बहुत कमजोर रहा था। पार्टी के रणनीतिकारों का मानना है कि यह गैप लोकसभा में भी दूर नहीं हुआ। इस वजह से पार्टी को कुछ सीटों का नुकसान हो सकता है।

आईपीएल के होनहार बनेंगे भारत का भविष्य, रियान-नितीश ने मचाई सनसनी

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

आईपीएल 2024 का रोमांच जारी है। 50 से ज्यादा मुकाबले अब तक खेले जा चुके हैं। इनमें कई युवा भारतीय खिलाड़ियों ने अपना जलवा बिखेरा है। दुनिया की लोकप्रिय लीग हमेशा से युवाओं के लिए वरदान साबित हुई है। इसके जरिए तमाम खिलाड़ियों को भारतीय टीम में मौका मिला है। 17वें सीजन में भी मयंक यादव, रियान पराग जैसे युवा अपने खेल की वजह से चर्चाओं में बने हुए हैं। इन खिलाड़ियों को भारत का भविष्य माना जा रहा है।

10 मैच, 409 रन, 159.14 स्ट्राइक

रियान पराग

राजस्थान रॉयल्स के दमदार बल्लेबाज रियान पराग ने आईपीएल के इस सीजन में अलग अंदाज में नजर आ रहे हैं। उनके बल्ले से निकलता हर शॉट उनके हुनर की गवाही दे रहा है। राजस्थान के लिए अब तक 10 मैच खेल चुके इस बल्लेबाज ने 159.14 के स्ट्राइक रेट से 409 रन बनाए हैं। मौजूदा समय में वह सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ियों की लिस्ट में चौथे स्थान पर हैं। क्रिकेट एक्सपर्ट्स का मानना है कि उन्हें जल्द ही बीसीसीआई की तरफ से बुलावा आ सकता है।

आशुतोष शर्मा

7 मैच , 159 रन
189.29 स्ट्राइक रेट

पंजाब किंग्स के स्टार फिनिशर आशुतोष शर्मा ने भी अपने प्रदर्शन से इस साल प्रभावित किया है। निचले क्रम पर उतरकर वह ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हैं। इस सीजन में उन्होंने सात मैचों में 159 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 189.29 का रहा है। 25 वर्षीय बल्लेबाज के नाम आईपीएल में एक अर्धशतक दर्ज है। माना जा रहा है कि जल्द ही उन्हें भारतीय टीम में जगह मिल सकती है।

नेहल वढेरा

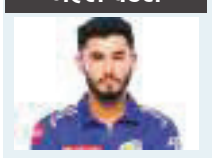

4 मैच , 105 रन
134.62 स्ट्राइक रेट

मुंबई इंडियंस के युवा बल्लेबाज नेहल वढेरा ने इस सीजन में कई उपयोगी पारियां खेली हैं। उन्होंने अपनी जुझारू पारियों से दर्शकों को प्रभावित किया है। मध्यक्रम के इस बल्लेबाज ने चार मैचों में 134.62 के स्ट्राइक रेट से 105 रन बनाए हैं। इस सीजन उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 49 रनों का रहा है। वहीं, पिछले सीजन में भी उनका बल्ला जमकर गरजा था। 25 वर्षीय बल्लेबाज ने 14 मुकाबलों में दो अर्धशतकों की बदौलत 241 रन बनाए थे।

नितीश रेड्डी

7 मैच , 219 रन
154.23 स्ट्राइक रेट

युवा ऑलराउंडर नितीश रेड्डी ने आईपीएल 2024 में विस्फोटक प्रदर्शन किया है। गेंद और बल्ले से वह इस सीजन में धमाल मचाते दिख रहे हैं। सनराइजर्स हैदराबाद के लिए नितीश ने सात मैचों में 154.23 के स्ट्राइक रेट से 219 रन बनाए हैं। इस सीजन उनके बल्ले से दो अर्धशतक निकले। वहीं, उनका उच्चतम स्कोर 76* रनों का रहा है। इसके अलावा 20 वर्षीय खिलाड़ी ने तीन विकेट चटकाए हैं।

9 मैच , 10 विकेट
27.70 औसत

तुषार देशपांडे

चेन्नई सुपर किंग्स के तेज गेंदबाज तुषार देशपांडे इस सीजन में घातक गेंदबाजी करते नजर आ रहे हैं। चेन्नई के लिए उन्होंने नौ मैचों में 10 विकेट चटकाए हैं। तुषार में भारतीय प्रशंसकों को भारत का भविष्य नजर आ रहा है। माना जा रहा है कि जल्द ही उन्हें टीम इंडिया की तरफ से बुलावा भेजा जा सकता है।

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
राजस्थान	10	8	2	16
कोलकाता	10	7	3	14
लखनऊ	10	6	4	12
हैदराबाद	10	6	4	12
चेन्नई	10	5	5	10
दिल्ली	11	5	6	10
बेंगलोर	11	4	7	8
पंजाब	10	4	6	8
गुजरात	11	4	7	8
मुंबई	11	3	8	6

ऑरेंज कैप

विराट कोहली
542 रन
बेंगलोर

पर्पल कैप

जसप्रीत बुमराह
17 विकेट
मुंबई

बाउंड्री मीटर

1611 चौके

931 छक्के

खबर संक्षेप

बैन दवाओं पर मुक्केबाज अखिल ने किया जागरुक

नई दिल्ली। राष्ट्रमंडल खेलों के पूर्व स्वर्ण पदक विजेता मुक्केबाज और झज्जर पुलिस में सहायक आयुक्त अखिल कुमार ने झज्जर के जवाहरलाल बाग स्टेडियम में बातचीत में उभरते हुए खिलाड़ियों को सलाह दी कि उन्हें नशीली दवाओं के खतरे से बचकर रहना चाहिए। अखिल ने पीटीआई से कहा, 'बतौर खिलाड़ी और राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी के पैनल के सदस्य होने के नाते मैं इसके खतरे को समझता हूं। इसलिए मैंने उन्हें सलाह दी कि इससे कैसे दूर रहें। मैंने उन्हें कहा कि नियमित रूप से होने वाले मेडिकल चेक-अप के दौरान भी उन्हें डॉक्टर को बताना चाहिए कि वे एथलीट हैं ताकि वे उन्हें प्रतिबंधित दवाई नहीं लिखें।'

पीठ में जकड़न के कारण इम्पैक्ट प्लेयर बने रोहित

मुंबई। लेग स्पिनर पीयूष चावला ने कहा कि भारतीय कप्तान और मुंबई इंडियंस के सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा को पीठ में थोड़ी जकड़न के कारण कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ इंडियन आईपीएल मैच में बतौर 'इम्पैक्ट सब' खेलने के लिए बाध्य होना पड़ा था। 'इम्पैक्ट सब' के तौर पर खेलने उतरे रोहित 12 गेंद में महज 11 रन ही जोड़ सके। इस मैच में मुंबई इंडियंस को केकेआर से 24 रन की हार का सामना करना पड़ा। इससे पांच बार की चैंपियन टीम इस साल के आईपीएल से लगभग बाहर हो गई है।

ब्रिटेन दौरे पर तमिलनाडु की युवा टीम देगी चुनौती

चेन्नई। तमिलनाडु के युवा खिलाड़ियों की टीम ब्रिटेन दौरे के दौरान विभिन्न टीमों के खिलाफ सीमित ओवरों के मैच के अलावा कई दिन चलने वाले मुकाबले भी खेलेगी। तमिलनाडु क्रिकेट संघ ने शनिवार को टीम के श्रृंखला के लिए रवाना होने की घोषणा की। टीएनसीए ने एक विज्ञप्ति में कहा कि यह दौरा आधिकारिक रूप से सोमवार से शुरू होगा। टीम के कोच पूर्व भारतीय गेंदबाज लक्ष्मीपति बालाजी हैं जबकि एक अन्य पूर्व भारतीय खिलाड़ी रोबिन सिंह सलाहकार और तनवीर जब्बार बल्लेबाजी कोच हैं। राज्य के विकेटकीपर बल्लेबाज एन जगदीशन और प्रदोष रंजन पॉल टीम के मशहूर चेहरे हैं। इस दौरे पर नाटिंघम, मैनचेस्टर और लंदन में सात वनडे और चार कई दिवसीय मैच खेले जाएंगे।

आईपीएल
11 मैचों में आठ अंक के साथ सातवें स्थान पर आरसीबी

बेंगलोर की हैट्रिक जीत, प्लेऑफ की उम्मीदें बरकरार, गुजरात को चार विकेट से हराया

एजेंसी ▶▶| बेंगलोर

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर ने इंडियन प्रीमियर लीग के मैच में शनिवार को गुजरात टाइटंस को चार विकेट से हरा दिया। यह आरसीबी की लगातार तीसरी जीत है। गुजरात टाइटंस की टीम ने 19.3 ओवर में ऑल आउट होकर 147 रन बनाए। रॉयल चैलेंजर्स ने 13.4 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 152 बनाए। इस जीत से आरसीबी 11 मैचों में आठ अंक के साथ सातवें स्थान पर है और तकनीकी तौर पर प्लेऑफ की दौड़ से बाहर नहीं हुई है। गुजरात टाइटंस की टीम इस सीजन 11 में से 7 मैच हारकर 9वें स्थान पर है। फाफ डु प्लेसी ने 23 गेंद में दस चौकों और तीन छक्कों की मदद से 64 रन बनाए जबकि विराट कोहली ने 27 गेंद में दो चौकों और चार छक्कों के साथ 42 रन की पारी खेली। दोनों ने पहले विकेट के लिए 35 गेंद में 92 रन जोड़े। अपनी गलतियों के कारण हालांकि एक बार आरसीबी 148 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए लड़खड़ा गई थी। डुप्लेसी और कोहली ने पावरप्ले में 92 रन जोड़े जिसमें 10 चौके और सात छक्के शामिल थे।

टी-20 में डुप्लेसी के 10 हजार रन पूरे

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान डुप्लेसी ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए टी-20 क्रिकेट में अपने 10 हजार रन भी पूरे किए। फाफ ने अपना अर्धशतक महज 18 गेंदों में पूरा किया। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने महज 23 गेंदों का सामना करते हुए 64 रन की विस्फोटक पारी खेली। फाफ ने आरसीबी की तरफ से दूसरा सबसे तेज अर्धशतक जड़ा। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर की ओर से सबसे तेज फिफ्टी जमाने का रिकॉर्ड क्रिस गेल के नाम दर्ज है, जिन्होंने 2013 में सिर्फ 17 गेंदों में पचास रन ठोक डाले थे।

स्कोर बोर्ड

गुजरात टाइटंस	रन	गेंद	4	6
साहा का कार्तिक बो सिराज	01	07	0	0
गिल का विशाक बो सिराज	02	07	0	0
सुदर्शन का कोहली बो ग्रीन	06	14	0	0
शाहरुख खान रन आउट	37	24	5	1
मिलर का मैक्सवेल बो शर्मा	30	20	3	2
तेवतिया का विशाक बो दयाल	35	21	5	1
राशिद खान बो दयाल	18	14	2	1
शंकर का सिराज बो विशाक	10	07	2	0
सुतार का स्वप्निल बो विशाक	01	02	0	0
मोहित शर्मा रन आउट	00	01	0	0
नूर अहमद रन आउट	00	00	0	0

अतिरिक्त : 07, कुल : 19.3 ओवर में 147/10
गेंदबाजी : स्वप्निल 1-0-1-0, सिराज 4-0-29-2, दयाल 4-0-21-2, ग्रीन4-0-28-1, विशाक 3.3-0-23-2, शर्मा 3-0-42-1.

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर	रन	गेंद	4	6
कोहली का साहा बो अहमद	42	27	2	4
डुप्लेसी का शाहरुख बो लिटिल	64	23	10	3
जैक्स का शाहरुख बो अहमद	01	03	0	0
पाटीदार का मिलर बो लिटिल	02	03	0	0
मैक्सवेल का मिलर बो लिटिल	04	03	1	0
ग्रीन का शाहरुख बो लिटिल	01	02	0	0
दिनेश कार्तिक नाबाद	21	12	3	0
स्वप्निल सिंह नाबाद	15	09	2	1

अतिरिक्त : 02, कुल : 13.4 ओवर में 152/6
गेंदबाजी : मोहित 2-0-32-0, लिटिल 4-0-45-4, सुतार 2-0-26-0, अहमद 4-0-23-2, राशिद 1.4-0-25-0

पंजाब पर पटलवार करने उतरेगी चेन्नई

धर्मशाला। गत चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स रविवार को यहां लगातार दूसरी बार इंडियन प्रीमियर लीग मैच में पंजाब किंग्स से भिड़ेगी तो उसकी कोशिश जीत की लय हासिल करने पर लगी होगी। तीन दिन पहले ही पंजाब किंग्स ने चेपक पर सीएसके को सात विकेट से हराया था। घरेलू टीम की यह पिछले तीन मैच में दूसरी हार थी जिससे टीम मुश्किल में है। सीएसके 10 अंक लेकर तालिका में पांचवें स्थान पर है और पांच बार की चैंपियन उम्मीद करेगी कि स्थान बदलने से उसका भाग्य भी बदल जाएगा।

एलएसजी के सामने केकेआर की चुनौती

लखनऊ। इंडियन प्रीमियर लीग में प्लेऑफ की ओर बढ़ रही लखनऊ सुपरजायंट्स और कोलकाता नाइट राइडर्स की टीमें रविवार को जब एक-दूसरे के सामने मैदान में होंगी तो उनका इरादा जीत के साथ अंतिम चार में अपनी जगह का दावा मजबूत करने पर होगा। मुंबई इंडियंस को उसके घरेलू मैदान पर कम स्कोर वाले मैच में 24 रन से मात देने के बाद केकेआर को नाम 14 अंक हो गए है और टीम प्लेऑफ क्वालीफिकेशन के बेहद करीब है। ऐसे में लोकेश राहुल की अगुवाई में एलएसजी पर दबाव होगा।

खास खबर

धोनी मेरे क्रिकेट कॅरियर में निभा रहे पिता जैसी भूमिका : पथिराना

चेन्नई। श्रीलंका के तेज गेंदबाज मथीषा पथिराना ने करिश्माई क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी को अपने क्रिकेट करियर में पिता तुल्य करार देते हुए कहा कि चेन्नई सुपरकिंग्स के पूर्व कप्तान की छोटी-छोटी सलाह से उन्हें काफी आत्मविश्वास मिला है। इस 21 साल के गेंदबाज ने 2022 में इंडियन प्रीमियर लीग में पदार्पण किया था और तब से वह सीएसके की तेजी गेंदबाजी इकाई के प्रमुख स्तंभ है। उनके शानदार प्रदर्शन पिछले सत्र में सीएसके को चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। धोनी से मिले मार्गदर्शन पर पथिराना ने कहा, 'मेरे पिता के बाद, मेरे क्रिकेट जीवन में ज्यादातर वही (एमएस धोनी) पिता जैसी भूमिका निभाते हैं। वह हमेशा मेरा ख्याल रखते हैं और मुझे कुछ मार्गदर्शन देते रहते हैं। यह ऐसा ही है जैसे मेरे पिता घर में करते हैं।'

चौरसिया मेक्यूंग ओपन में 24वें स्थान पर खिसके

सियोल। भारतीय गोल्फर एसएसपी चौरसिया ने शनिवार को यहां जीएस कालटेक्स मेक्यूंग ओपन के तीसरे दौर में दो ओवर 73 का कार्ड खेला जिससे वह संयुक्त 24वें स्थान पर खिसक गये।

एशियाई टूर टूर्नामेंट के तीसरे दौर के बाद अब उनका कुल स्कोर एक अंडर 212 है जबकि बीती रात वह संयुक्त 13वें स्थान पर चल रहे थे। कट हासिल करने वाले अन्य भारतीय गोल्फर अजीतेश संधू 74 के कार्ड से संयुक्त 51वें स्थान पर बने हुए हैं।

आलोचनाओं के बीच पंड्या को मिला परिवार का साथ

नई दिल्ली। मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या के लिए आईपीएल का 17वां सीजन कुछ खास नहीं रहा। नई जिम्मेदारी मिलने के बाद उन्हें फैंस के गुस्से का सामना करना पड़ा। वहीं, मुंबई की टीम भी इस सीजन में प्लेऑफ की रेस से लगभग बाहर हो चुकी है। ऐसे में फैंस का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया है। स्टार ऑलराउंडर को आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। इस बीच पांड्या ने अपने परिवार को लेकर चर्चा की।

एशियन अंडर-22 : भारतीयों ने पक्के किए रिकॉर्ड 43 पदक

एजेंसी ▶▶| अस्ताना

आकाश गोरखा, विश्वनाथ सुरेश, निखिल और प्रीत मलिक ने शनिवार को यहां अंडर-22 पुरुष फाइनल में प्रवेश किया जिससे भारतीय मुक्केबाजों ने एएसबीसी एशियाई अंडर-22 एवं युवा मुक्केबाजी चैंपियनशिप के विभिन्न वर्गों में अभूतपूर्व 43 पदक पक्के किए। सीनियर राष्ट्रीय चैंपियन आकाश ने 60 किग्रा वर्ग में दबदबा बनाते हुए सेमीफाइनल में उज्बेकिस्तान के इलासोव सयात पर 5-0 से जीत हासिल की।

मौजूदा युवा विश्व चैंपियन विश्वनाथ (48 किग्रा) ने रिव्यू के बाद फिलीपींस के बारिकुआत्रो ब्रायन पर 5-2 से जीत दर्ज की। निखिल (57 किग्रा) और प्रीत (67 किग्रा) ने भी क्रमशः मंगोलिया के दोर्जानयाम्बु गानबोल्ड और किर्गिस्तान के अल्माज ओरोजबेकोव को 5-2 के समान अंतर से मात दी।लेकिन एम जादूमणि सिंह (51 किग्रा), अजय कुमार (63.5 किग्रा), अंकुश (71 किग्रा), ध्रुव सिंह (80 किग्रा), जुगनू (86 किग्रा) और युवराज (92 किग्रा) को अंडर-22 के अपने सेमीफाइनल गंवाने से कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। ओलंपिक जाने वाली टीम की सदस्य प्रीति (54 किग्रा) सहित नौ महिला मुक्केबाज अंडर-22 सेमीफाइनल खेलेंगी। अंडर-22 फाइनल मंगलवार को खेले जाएंगे। युवा महिला सेमीफाइनल शुक्रवार रात को होंगे।

पंड्या थके हुए और दबाव में दिखे : फिंच

मुंबई। पूर्व क्रिकेटर आरोन फिंच और ग्रीम स्मिथ का मानना है कि भारतीय उप कप्तान हार्दिक पंड्या थके हुए, हताश और दबाव में दिख रहे हैं तथा उनकी अगुआई में पांच बार की चैंपियन का इंडियन प्रीमियर लीग के इस चरण में जूझना जारी है।

शुक्रवार को वानखेडे स्टेडियम में पंड्या को फिर 'हूटिंग' का सामना करना पड़ा जो टीम के लिए निराशाजनक मुकाबला रहा जिसमें कोलकाता नाइट राइडर्स ने उन्हें 24 रन से शिकस्त दी। दक्षिण अफ्रीका के महान कप्तान ग्रीम स्मिथ ने कहा कि मुंबई इंडियंस पंड्या की अगुवाई में भ्रमित लग रही है जिसमें काफी बदलाव किए जा रहे हैं।

जूनियर हॉकी टीम की अगुवाई करेंगे रोहित...

नई दिल्ली। रक्षापंक्ति के खिलाड़ी रोहित की अगुवाई में भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी 20-29 मई तक यूरोप दौरे पर पांच मैच खेलेगी। इस 20 सदस्यीय टीम में शारदानंद तिवारी को उपकप्तान बनाया गया है। हॉकी इंडिया के खिलाड़ियों को अनुभव दिलाने के साथ प्रदर्शन को बेहतर करने की पहल के तहत भारतीय टीम बेल्जियम, जर्मनी और नीदरलैंड में पांच मैच खेलेगी। रोहित ने कहा, 'हम अपने शिविर में कड़ी ट्रेनिंग कर रहे हैं और एक-दूसरे के खेलने की तरीके को समझ रहे है।'

26 सदस्यीय संभावित टीम में आई लीग के चार खिलाड़ी शामिल

भारतीय फुटबॉल टीम कुवैत-कतर को देगी चुनौती

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

भारतीय कोच इगोर स्टिमक ने शनिवार को 26 सदस्यीय संभावित सूची में आई-लीग के चार खिलाड़ियों को शामिल किया है। यह टीम कुवैत और कतर के खिलाफ फीफा विश्व कप 2026 और एएफसी एशियाई कप 2027 के प्रारंभिक संयुक्त क्वालिफिकेशन के दूसरे चरण के मैचों में चुनौती देगी।

मिजोरम के 23 वर्षीय फॉरवर्ड डेविड लालहलानसंगा ने मोहम्मडन स्पोर्टिंग की आई-लीग जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टीम इससे शीर्ष स्तर की आईएसएल में जगह बनाने में सफल रही। रीयल कश्मीर के डिफेंडर मुहम्मद हम्माद और इंटर काशी के मिडफील्डर एडमंड लालरिंडिका के साथ आइजोल एफसी के फॉरवर्ड लालरिंजुआला लालबियाकनिया को भी टीम में जगह मिली है।

भारत के संभावित खिलाड़ी

गोलकीपरः अमरिंदर सिंह, गुरप्रीत सिंह संधू।
डिफेंडरः अमेय गणेश रानावाडे, जय गुप्ता, लालचुंगनुंगा, मुहम्मद हम्माद, नरेंद्र, निखिल पुजारी, रोशन सिंह नाओरेम।
मिडफील्डरः ब्रैंडन फर्नांडिस, एडमंड लालरिंडिका, इमरान खान, इसाक वनलालरुआतफेला, जेकसन सिंह थौनाओजम, महेश सिंह नाओरेम, मोहम्मद यासिर, नंदकुमार सेकर, राहुल कन्नोली प्रवीण, सुरेश सिंह वांगजाम, विबिन मोहनन।
फॉरवर्डः डेविड लालह्लानसंगा, जितिन मदाथिल सुबान, लालरिनजुआला लालबियाकनिया, पार्थिब गोगोई, रहीम अली, सुनील छेत्री।

10 को प्रशिक्षण शिविर

एआईएफएफ ने कहा कि मोहन बागान और मुंबई सिटी एफसी की टीमें आईएसएल फाइनल में भिड़ेगी ऐसे में इन दोनों टीमों से राष्ट्रीय टीम के लिए चुने जाने वाले संभावितों के नाम की घोषणा दूसरी सूची में की जाएगी। भारत 10 मई को भुवनेश्वर में प्रशिक्षण शिविर शुरू करेगा।

छह जून को पहला मैच

भारतीय टीम ग्रुप ए के अपने आखिरी दो मैचों में छह जून को कोलकाता में कुवैत के खिलाफ खेलने के बाद 11 जून को दोहा में कतर का सामना करेगी। भारत चार मैचों में चार अंक के साथ ग्रुप तालिका में दूसरे स्थान पर है। ग्रुप की शीर्ष दो टीमें फीफा विश्व कप क्वालीफायर के तीसरे दौर के लिए क्वालीफाई करने के साथ एएफसी एशियाई कप सऊदी अरब 2027 में अपनी जगह पक्की करेगी।

विश्व कप में 'इंपैक्ट प्लेयर' नहीं होने से सोचना पड़ेगा

एजेंसी ▶▶| मुंबई

कोलकाता नाइट राइडर्स और आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क का मानना है कि अगले महीने अमेरिका में टी20 विश्व कप शुरू होने पर इंडियन प्रीमियर लीग के इम्पैक्ट प्लेयर नियम नहीं होने से कप्तानों को अधिक रणनीति के साथ सोचने पर मजबूर होना पड़ेगा।

इम्पैक्ट प्लेयर नियम के तहत टीमों के पास मैच के दौरान एक खिलाड़ी को बदलने की आजादी होती है। इसे पिछले साल लागू किया गया था। जिसके बाद टीमों आसानी से 200 रन के आस-पास स्कोर कर रही हैं। मुंबई इंडियंस को आईपीएल टी20 मैच में शुक्रवार को 24 रन से हराने के बाद केकेआर के इस

गेंदबाज ने कहा, 'इम्पैक्ट प्लेयर नियम से चीजें काफी हद तक बदल जाती हैं। टीम को एक बल्लेबाज या गेंदबाज अधिक रखने की आजादी मिलती है और इससे बल्लेबाजी में अधिक गहराई आती है। आईपीएल में कुछ बड़े स्कोर, कुछ शानदार साझेदारियां और बल्ले से कुछ व्यक्तिगत प्रतिभाएं देखने को मिलीं। अगले महीने होने वाले विश्व कप में ऐसा कोई नियम नहीं होगा। ऐसे में यह देखना होगा कि इसका स्कोर पर क्या असर पड़ता है।

पलामू, गुमला और उत्तर प्रदेश में पीएम मोदी ने कांग्रेस पर किया बड़ा हमला

कांग्रेस, जेएमएम और आरजेडी कर रहीं जनता की जायदाद हड़पने की कोशिश, ये भ्रष्टाचार के दलदल में फंसे, अब आरक्षण 'लूटना' चाह रहे

एजेंसी ▶▶ बनारस/ गुमला/ पलामू

पीएम ने बताया कि भाजपा और झारखंड का दिली रिश्ता है। उन्होंने कांग्रेस और झारखंड मुक्ति मोर्चा पर जनता की जायदाद को हड़पने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि 500 साल में जो नहीं हुआ, जनता के एक वोट से वो कार्य पूरा हुआ।

तीसरे चरण के मतदान से पहले पीएम नरेंद्र मोदी झारखंड में लोकसभा चुनाव प्रचार करने पहुंचे। पलामू में प्रचार के दौरान रैली को भी संबोधित किया। पीएम मोदी ने बताया कि भाजपा और झारखंड का दिल का रिश्ता है। उन्होंने कांग्रेस और राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) पर जनता की जायदाद को हड़पने की कोशिश करने का आरोप लगाया है।

उन्होंने बताया कि 500 साल में जो नहीं हुआ, जनता के एक वोट से वो कार्य पूरा हुआ। आज आयोध्या में राम मंदिर बन गया। आप सभी अपने एक वोट के महत्व को अच्छी तरह जानते हैं। 2014 में आपके एक वोट ने ऐसा काम किया कि पूरी दुनिया भारत के लोकतंत्र की ताकत को सलाम करने लगी थी। आपने 2014 में एक वोट से कांग्रेस की महाभ्रष्ट सरकार को हटा दिया था। आपके एक वोट ने माताओं की आस पूरी की। नक्सलवाद और आतंकवाद से मुक्ति दिला दी।

2014 में आपके एक वोट ने दुनिया को दिखा दी भारत की बढ़ती ताकत

मजबूत सरकार के लिए मोदी सरकार...

उन्होंने बताया कि एक वो स्थिति थी, जब आतंकी हमले के बाद कांग्रेस की डरपोक सरकार दुनिया भर में जाकर रोती थी। आज स्थिति ये है कि पाकिस्तान दुनिया भर में जाकर रो रहा है। मजबूत भारत तो अब मजबूत सरकार ही चाहता है। पूरा हिंदुस्तान कह रहा है-मजबूत भारत के लिए मजबूत सरकार, मजबूत सरकार के लिए मोदी सरकार। पीएम ने कहा कि कांग्रेस के शहजादे मोदी के आंसुओं में अपनी खुशी ढूंढ रहे हैं। कहते हैं कि मोदी के आंसू अच्छे लगते हैं। ये निराश-हताश लोग अब कुंठित हो गए हैं। एक कहावत है - जाके पांव न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई! कांग्रेस के शहजादे की हालत वही है।

विपक्ष को जनता की जायदाद के अलावा कुछ नहीं दिखता

प्रधानमंत्री ने बताया कि वह झारखंड में रोजगार बढ़ाना चाहते हैं और यहां के लोगों के जीवन में खुशहाली लाना चाहते हैं। उन्होंने कांग्रेस पर झारखंड की जनता की जमीनों पर कब्जा करने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस और झामुमो की नजर केवल जनता की जायदाद पर है, उन्हें इसके अलावा कुछ नहीं दिखता।

झामुमो ने मात्र भ्रष्टाचार किया

सत्तारूढ़ पार्टी झामुमो पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि झामुमो और कांग्रेस के नेताओं ने भ्रष्ट्राचार से अपार धन संपदा खड़ी की है। मैं तो गरीबी का जीवन जीकर आया हूं। इसलिए, 10 वर्षों में गरीब कल्याण की हर योजना की प्रेरणा, मेरे जीवन के अनुभव ही हैं। जब आज लाभार्थियों से मिलता हूं, तो खुशी के मारे आंसू आ ही जाते हैं। ये आंसू वही समझ सकता है, जिसने गरीबी देखी हो।

नया भारत अब शत्रुओं को घर में घुसकर मारता है

पीएम ने कहा कि आपके एक वोट की ताकत की बदौलत पूरी दुनिया में भारत का डंका बज रहा है। इसी वोट की ताकत से ऐसा नया भारत बना है, जो घर में घुसकर मारता है। पहले कांग्रेस की डरपोक सरकार दुनिया में जाकर रोती थी। आज पाकिस्तान दुनिया भर में जा-जाकर रोता है। पलामू के चियांकी हवाई अड्डा मैदान में आयोजित महारैली में उमड़ी विशाल भीड़ को देखकर पीएम मोदी ने कहा कि आपने जेएमएम-कांग्रेस को दिन में तारे दिखा दिए।

जमानत पर हैं शहजादे के पिता

पीएम ने कहा कि राजद का इतिहास सदैव सामाजिक न्याय का मुखौटा लगाकर तुष्टीकरण करने का रहा है। जब गोधरा में कार सेवकों को जिंदा जलाया गया था तब रेल मंत्री बिहार के शहजादे के पिता थे। जो सजा काट रहे हैं और जमानत पर घूम रहे हैं। इन पर भ्रष्टाचार के कई मामले दर्ज हैं।

आरक्षण को छूना असंभव

लोकसभा चुनाव को लेकर झारखंड के गुमला जिले में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि जितने लोग मैदान में हैं उससे ज्यादा तो बाहर में हैं। एससी एसटी ओबीसी को जब आरक्षण मिला है उसमे चोरी करें का खेल चल रहा है। जब तक मैं हूं आरक्षम को कोई छू नहीं सकता।

जय श्रीराम के साथ बजे शंख, मंजीरे और डमरू

वाराणसी। जय श्रीराम...जय जय श्रीराम के जयकारों के बीच शंख, मंजिरा, डमरू, करताल की मंत्रमुग्ध करती ध्वनि। राम स्तुति पर मनोहारी नृत्य करते छात्र। अनेकता में एकता का संदेश देतीं विभिन्न प्रांतों की वेशभूषा में तैयार छात्राएं। मौका था शनिवार के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रोड शो कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन का, जिसमें विभिन्न संगीत और नृत्य संस्थानों के छात्र-छात्राएं शामिल हुए। उसबसे पहले राम आएंगे...राम आएंगे भजन की प्रस्तुति हुई। बच्चों ने विकसित भारत तस्वीर की झांकी भी लगाई है। यहां पर एक एलसीडी स्क्रीन लगाई गई है। साथ ही, पुष्प वर्षा का इंतजाम किया गया है। बच्चों और महिलाओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है।

गुजरात की रैली में शाह का राहुल पर तीखा तंज

समस्या लोकसभा सीट में नहीं 'आप' में है

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने गुजरात के छोटा उदयपुर में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस और राहुल गांधी को जमकर निशाने पर लिया। राहुल के बार-बार सीट बदलने को लेकर उन्होंने तीखा तंज कसा और कहा कि समस्या लोकसभा सीट में नहीं है, बल्कि खुद राहुल में है। उन्होंने कांग्रेस पर निर्धारित आरक्षण पर भी डाका डालने का आरोप लगाया। वे अमेठी में हार गए तो वायनाड चले गए। अब वह वायनाड में हारने वाले हैं, तो अमेठी जाने की बजाय रायबरेली भागे।

कांग्रेस एक नंबर की आदिवासी विरोधी पार्टी

शाह ने शनिवार को छोटाउदेपुर जिले के बोडेली में आयोजित चुनावी सभा में आरक्षण और संविधान को लेकर कांग्रेस की ओर से किए जा रहे दावों को झूठा करार देते हुए कहा कि केन्द्र में जब तक भाजपा सरकार है, आरक्षण को कोई हाथ नहीं लगा सकता। उन्होंने कहा कि कांग्रेस एक नंबर की आदिवासी विरोधी पार्टी है। इन्हें केवल झूठ बोलना आता है।

आचार्य प्रमोद कृष्णम का बड़ा दावा

चुनाव बाद राहुल-प्रियंका-गुट में बंट जाएगी कांग्रेस

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी को टिकट न मिलने पर पूर्व कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि राहुल गांधी की जो पलायन वाली नीति है। उन्होंने अमेठी को छोड़ा है। प्रियंका के चुनाव न लड़ने से कांग्रेस नेताओं में एक ज्वालामुखी धधक रहा है जो 4 जून के बाद फटेगा। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि कांग्रेस का एक और विभाजन सुनिश्चित है। 4 जून के बाद वह दो धड़ों राहुल गांधी का और प्रियंका गांधी के धड़े में बंट जाएगी।

पाक के फवाद का फिर उमड़ा राहुल के लिए प्यार

नई दिल्ली। पाकिस्तान के इमरान खान की कैबिनेट में मंत्री रह चुके फवाद चौधरी ने फिर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तारीफ की है।उन्होंने एक्स पर लिखा कि राहुल परदादा जवाहरलाल की तरह ही समाजवादी हैं, विभाजन के 75 साल बाद भी भारत और पाक की समस्याएं एक जैसी हैं। राहुल ने कल रात अपने भाषण में कहा कि 30 या 50 परिवारों के पास भारत की 70% संपत्ति है, इसलिए पाकिस्तान में भी है जहां केवल पाक बिजनेस काउंसिल नामक एक बिजनेस क्लब और कुछ रियल एस्टेट सेठों के पास पाक संपत्ति का 75% हिस्सा है।

कांग्रेस को सरहद पार से मोहब्बत का पैगाम मिल रहा

नई दिल्ली। इस पर भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि चौधरी ने हाल ही में वही कहा जो विपक्ष भारत में कहता है, यानी भारत में भाजपा की सरकार नहीं आनी चाहिए, पीएम मोदी को हारना चाहिए। मैं सभी से अनुरोध है कि वे जाएं और फवाद चौधरी का ट्वीट देखें। कांग्रेस को सरहद पार से मोहब्बत का पैगाम मिल रहा है।

खबर संक्षेप

तमिलनाडु में कांग्रेस नेता का शव मिला

तिरुनेलवेली। तमिलनाडु के तिरुनेलवेली में शनिवार को एक जिला कांग्रेस नेता मृत पाया गया।

मृत पाए गए जिला कांग्रेस नेता की पहचान केपीके जयकुमार धनसिंह के रूप में हुई है। जिनका आधा जला हुआ शव खेल में मिला। पुलिस ने बताया कि यह वारदात तब हुई जब हाल ही में पीड़ित ने जान को खतरा होने का दावा किया था। धनसिंह कांग्रेस की तिरुनेलवेली (पूर्व) इकाई के प्रमुख थे।

राष्ट्रपति 8 मई तक दौरे में हिमाचल पहुंचीं

शिमला। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 4 से 8 मई, 2024 तक हिमाचल प्रदेश का दौरा करेंगी। वे शिमला के

मशोबरा स्थित राष्ट्रपति भवन में रुकेंगी।राष्ट्रपति 6 मई को धर्मशाला में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के 7वें दीक्षांत समारोह में भाग लेंगी। 7 मई को राष्ट्रपति गेयटी हेरिटेज कल्चरल कॉम्प्लेक्स, शिमला में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेंगी। राजभवन में राज्यपाल के रात्रिभोज में शामिल होंगी।

थापन परिवार हाई कोर्ट में, खान पर एक्शन हो

मुंबई। बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के घर के बाहर फायरिंग करने के मामले बड़ी खबर

है। आरोपी अनुज थापन ने कुछ दिन पहले जेल में कथित रूप से आत्महत्या कर ली थी। थापन के परिवार ने मुंबई हाई कोर्ट में रिट फाइल की है। हाई कोर्ट से खान के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। मामले की सीबीआई जांच की मांग भी मृतक के परिवार ने की है।

रेवन्ना मामले में राहुल गांधी ने लिखी सीएम सिद्धारैमया को चिट्ठी

सख्त कार्रवाई करने को कहा, जेडीएस नेताओं के घर एसआईटी ने की पूछताछ

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली/ बेंगलुरु

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कर्नाटक के सीएम सिद्धरमैया को पत्र लिखा है। इसमें जनता दल सेक्युलर के नेता प्रज्वल रेवन्ना के उत्पीड़न का शिकार हुईं पीड़िताओं को हरसंभव मदद देने को कहा गया है। सिद्धारमैया को लिखे पत्र में रेवन्ना के कृत्यों की निंदा की और उनके ऊपर पीएम नरेंद्र मोदी व केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का हाथ होने का आरोप लगाया।

पीएम पर निशाना साधते हुए राहुल ने कहा कि उन्होंने अभी तक ऐसा जनप्रतिनिधि नहीं देखा, जिसने महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मामलों पर लगातार चुप्पी साधे रखी हो। उन्होंने पत्र में कहा कि मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि कृपया पीड़िताओं को हरसंभव सहायता प्रदान करें। राहुल ने कहा,वे हमारी करुणा और एकजुटता की पात्र हैं। यह सुनिश्चित करना हमारा सामूहिक कर्तव्य है कि इन जघन्य अपराधों के लिए जिम्मेदार सभी लोगों को सजा दी जाए।

पीड़िताओं को हरसंभव मदद देने को कहा

राहुल ने कहा कि उन्होंने अभी तक ऐसा जनप्रतिनिधि नहीं देखा, जिसने महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मामलों पर लगातार चुप्पी साधे रखी हो।

जघन्य अपराध किया गया

घटनाओं को यौन हिंसा करार देते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि रेवन्ना ने कई वर्षों में सैकड़ों महिलाओं का यौन उत्पीड़न किया और उनका वीडियो बनाया। उनमें से कई महिलाएं, जो उसे भाई और बेटे के रूप में देखती थीं, उनके साथ भी हिंसक तरीके से क्रूरता की गई और गरिमा को ठेस पहुंचाई गई।

मुझे सदमा लगा

राहुल ने कहा कि मुझे यह जानकर गहरा सदमा लगा कि दिसंबर 2023 में जी देवराजे गौड़ा ने प्रज्वल की हरकतों, विशेष रूप से उनके यौन हिंसा के इतिहास और वीडियो के बारे में शाह को बताया था। भाजपा के वरिष्ठ नेताओं को इन वीभत्स आरोपों की जानकारी थी, लेकिन इसके बावजूद मोदी ने एक बलात्कारी के लिए प्रचार किया। इसके अलावा केंद्र सरकार ने जान-बूझकर रेवन्ना को भारत से भागने दिया ताकि जांच को नुकसान पहुंचाया जा सके। इसकी कड़ी निंदा हो।

रेवन्ना को भारत लाएं

राहुल ने आरोप लगाया कि अपने 2 दशकों के जनसेवा इतिहास में मैंने कभी ऐसा वरिष्ठ जनप्रतिनिधि नहीं देखा, जिसने महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर निरंतर चुप्पी साध रखी हो। कर्नाटक सरकार ने जांच के लिए एसआईटी का गठन किया है। रेवन्ना को जल्द भारत लाने का अनुरोध भी किया है।

एसआईटी ने पूछताछ की

एसआईटी अधिकारी जद (एस) नेता एचडी रेवन्ना और प्रज्वल के होलेनरसीपुरा स्थित आवास पर शनिवार को पहुंचे। होलेनरसीपुरा थाने में पिता-पुत्र के खिलाफ छेड़छाड़ का मामला पहले ही दर्ज किया जा चुका है। इस नए मामले में मैसूरू जिले के कृष्णराजा नगर के रहने वाले 20 वर्षीय शिकायतकर्ता ने कहा कि रेवन्ना ने उसकी मां का अपहरण कर लिया है।

दिल्ली पुलिस को बड़ी साजिश का संकेत

शाह के फेक वीडियो मामले में एफआईआर में नई धारा जोड़ी

धारा 120बी (आपराधिक साजिश की सजा) लगाई

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के फेक वीडियो को वायरल करने के संबंध में दर्ज प्राथमिकी में आपराधिक साजिश के आरोप जोड़े गए हैं। दिल्ली पुलिस ने कांग्रेस के एक राष्ट्रीय समन्वयक को गिरफ्तार करने के एक दिन बाद शनिवार को इसकी जानकारी दी। पुलिस ने कहा कि तेलंगाना के हैदराबाद के मूल निवासी अरुण बीरेड्डी एक्स पर 'स्पिरिट ऑफ कांग्रेस' अकाउंट संभालते थे। उन्हें शुक्रवार को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया था। एफआईआर में आपराधिक साजिश की सजाजोड़ दी है, क्योंकि जांच में बड़ी साजिश का संकेत है।

रेड्डी 3 दिन की हिरासत में

रेड्डी कांग्रेस की सोशल मीडिया टीम के प्रमुख सदस्यों में से एक हैं और उन पर आरोप है कि उन्होंने छेड़छाड़ किए गए वीडियो को सोशल मीडिया पर अपलोड किया था। अन्य सदस्यों के साथ साझा भी किया। उन्हें शुक्रवार रात यहां एक अदालत में पेश किया गया और अदालत ने तीन दिन की हिरासत में भेज दिया।

इन धाराओं के तहत केस दर्ज

दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि बीरेड्डी से पूछताछ शुरू हो गई है। गृह मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (14सी) की एक शिकायत पर सेल ने रविवार को आईपीसी की धारा 153 (दंगा भड़काने के इरादे से उकसाना), 153ए (शत्रुता को बढ़ावा देना), धर्म, नस्ल, जन्म स्थान के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच), 465 (जालसाजी के लिए सजा), 469 (प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से जालसाजी), 171जी (चुनाव के संबंध में गलत बयान) के तहत एफआईआर दर्ज की थी।

केजीएमयू ने शोध पत्रों की स्टडी की

कोविशील्ड लगवाने वालों को अब डरने की जरूरत

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

केजीएमयू के न्यूरोलॉजी विभाग ने कोविशील्ड वैक्सीन के दुष्प्रभाव को

लेकर देशभर के शोध पत्रों का अध्ययन कर रिपोर्ट जारी की है। न्यूरोलॉजी इंडिया में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक यह वैक्सीन लगवाने वालों को अब दो साल बाद ब्लड क्लाटिंग, दिल का दौरा पड़ने व न्यूरो से संबंधित बीमारियों की आशंका न के बराबर है।वैक्सीन लगने के 2 हफ्ते में देशभर में करोड़ों लोगों में से महज 136 लोगों को कुछ परेशानी हुई थी। विभाग के प्रमुख डॉ. आरके गर्ग के निर्देशन में यह अध्ययन किया गया। डॉ. गर्ग ने बताया कि जून 2022 तक 1,97,34,08,500 कोविड वैक्सीन की डोज लगाई गई थी। इनमें ज्यादातर लोगों को कोविशील्ड वैक्सीन लगी थी। वैक्सीन के दुष्प्रभाव पर प्रकाशित शोध पत्रों का विभाग के डॉ. हरदीप सिंह मल्होत्रा, डॉ. इमरान रिजवी और डॉ. बालेंद्र प्रताप सिंह आदि ने अध्ययन किया। 10 मरीजों के दिमाग में खून का थक्का जमने की शिकायत मिली थी। हरपीज के सबसे ज्यादा 31 मामले मिले थे। मस्तिष्क व स्पाइन कॉर्ड में सूजन और फंक्शनल न्यूरोलॉजिकल डिसआर्डर के मामले भी थे।

राजस्थान-मध्यप्रदेश समेत 17 राज्यों में फिर बदलेगा मौसम

बारिश होगी, मुंबई-तमिलनाडु के समुद्र में ऊंची लहरें उठेंगी

4 मई से एक और वेस्टर्न डिस्टर्बेंस एक्टिव हो गया, कई दिन तक रहेगा

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

देश में भीषण गर्मी और हीटवेव का सामना कर रहे शहरों को अगले 8 दिन राहत मिलने जा रही है। 4 मई से एक और वेस्टर्न डिस्टर्बेंस एक्टिव हो रहा है। इससे पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी होगी, जबकि मैदानी इलाकों में मौसम बदलेगा और बारिश होगी।

फिलहाल उत्तर भारत के अलावा दक्षिण भारत में आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक में लू से पारा 45 का आंकड़ा भी पार कर गया है। 3 मई को सबसे ज्यादा तापमान आंध्रप्रदेश के नांदयाल में 46.5 डिग्री दर्ज किया गया।

मुंबई के आसपास तटीय इलाकों में हाई टाइड अलर्ट

तेलंगाना के खम्मम, बंगाल के कलाईकुंडा, ओडिशा के बौद्ध और तमिलनाडु के इरोड में पारा 42 डिग्री से 45 डिग्री के बीच रिकॉर्ड हुआ। इधर,आईएमडी और इंडियन नेशनल सेंटर फॉर ओशियन इन्फॉर्मेशन सर्विस ने शनिवार से अगले 36 घंटों के लिए मुंबई और आसपास के तटीय इलाकों में हाई टाइड अलर्ट जारी किया है। इस दौरान समंदर में 5 फीट तक ऊंची लहरें उठ सकती हैं। मछुआरों को 4 मई की रात 2.30 बजे से 5 मई की रात 11.30 तक समंदर में न जाने की सलाह दी गई है।

कई राज्यों में बारिश का ऑरेंज अलर्ट

अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, असम, मेघालय और त्रिपुरा में कई जगहों पर भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है। बंगाल, ओडिशा, तमिलनाडु, पुडुचेरी और कराईकल, तटीय आंध्र प्रदेश और यनम, रायलसीमा में अलग-अलग जगहों पर लू चलने की संभावना है। असम और मेघालय में बहुत ज्यादा बारिश होने की संभावना है। बेंगलुरू में 162 दिन बाद अच्छी बारिश हुई है। 6 मई से बारिश संभव है।

केरल के लिए हीटवेव की चेतावनी

आंध्र प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मुताबिक शनिवार को राज्य के 227 मंडलों में भीषण गर्मी पड़ने की संभावना है। केरल के 14 में से 12 जिलों में हीटवेव का येलो अलर्ट जारी किया है। यहां तापमान 40 डिग्री तक पहुंच सकता है। मौसम की जानकारी जुटाने वाली प्राइवेट एजेंसी स्कायमेट के अनुसार 6 मई से प्री-मानसून का दौर शुरू होने की उम्मीद है। नॉर्थईस्ट के राज्यों में 4 मई से 9 मई तक बारिश होगी। साथ ही 40 से 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलेंगी। नॉर्थ इंडिया यानी बिहार, झारखंड, बंगाल, उत्तर प्रदेश और ओडिशा में भी बारिश हो सकती है। इस तरह देश के काई राज्यों में मौसम में बड़ा परिवर्तन दिखाई देगा।

भ्रष्टाचार का काला खेल

आश्चर्यजनक किंतु सत्य, मित्तल कॉलोनी का विहंगम दृश्य

किसी ने भी कब्रिस्तान और 70 करोड़ रुपए से अधिक की जमीन को बचाने की नहीं की पहल

जिला प्रशासन सो रहा कुम्भकरणीय नींद | क्या होगी इस मामले पर कार्रवाई ?

राजस्थान की राजनीति

धौलपुर/जयपुर। पिछले 14 साल में नगर परिषद् क्षेत्र से एक लाख करोड़ रुपए से अधिक की सरकारी जमीन को बचाने के लिए न तो नगर के सभापतियों रीतेश शर्मा, कमल कंसाना, खुशबूसिंह व जन प्रतिनिधि अब्दुल सगीर, बीएल कुशवाह व शोभारनी ने जिला कलक्टर को एक लाईन की चिट्ठी नहीं लिखी है। मौका मिलते ही बहती गंगा में हाथ जरूर धो लिए हैं। जमीन के अधिकांश भाग को मित्तल बंधु ने खुर्दबुद कर दिया है। शेष जमीन को खुर्दबुद कर रहा है। कानूनी कार्रवाई से बचने के लिए मित्तल बंधु पर फर्जी दस्तावेज करने के आरोप लग रहे हैं और उधर जमीन पर वक्फ बोर्ड ने जमीन को कब्रिस्तान की बता कर दावा ठोक दिया है। इस संबंध में 30 अप्रेल को वक्फ बोर्ड की ओर से जिला कलक्टर श्रीनिधि बीटी को एक ज्ञापन भी दिया गया है।

बता दें कि शहर के एक व्यक्ति ने संबंधित विभागों में सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के तहत आवेदन कर तमाम दस्तावेजी सबूत संकलित किए हैं, उनमें राष्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या 44 आगरा-ग्वालियर एवं राष्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या 11बी तथा ऐतिहासिक पौराणिक धार्मिक स्थल मचकुंड मार्ग से सटी करीब 70 हजार करोड़ रुपए की बेशकीमती सरकारी भूमि पर अवैध अतिक्रमण एवं निर्माण की सूचनाएं शामिल हैं। 25 अगस्त, 2014 को जल संसाधन खंड के अधिशासी अभियंता की ओर से जिला कलक्टर को पत्र लिख दी गई सूचना का पत्र क्रमांक = 2396, 02 अगस्त, 2014 को पुलिस थाना कोतवाली के थानाध्यक्ष को लिखे पत्र क्रमांक = 2071-72, 24-03-2014 को पत्र क्रमांक = 889-90 को लिखे गए पत्र एवं अन्य उपलब्ध रिकार्ड की प्रतियां संकलित की हैं। पत्रों के अनुसार तत्कालीन जिला कलक्टर का ध्यान में उर्मिला सागर बांध की नहरों पर हुए अतिक्रमणों को हटाने की ओर आकर्षित किया था। त्वरित कार्रवाई होती तो समस्या विकराल रूप धारण नहीं करती। 10 साल में केवल कागजी घोड़े ही दौड़ाए गए हैं, परिणाम दिखाई नहीं दिए हैं।

05 जुलाई, 2019 को अतिरिक्त जिला कलक्टर ने अपने पत्र क्रमांक = 3666 के साथ 08-08-2018 को उपखंड अधिकारी द्वारा लिखा पत्र क्रमांक = पीए 2018/1626 की प्रति उपलब्ध कराई गई है। पत्र जिला कलक्टर भेजा है, जिसमें अतिक्रमण की जांच तहसीलदार (भू.अ.), नगर परिषद् के आयुक्त और जल संसाधन खंड प्रथम के अधिशासी अभियंता का है। इसमें 18 से 23 जनवरी, 2018 के बीच कराई गई संयुक्त जांच की रिपोर्ट है। रिपोर्ट ग्राम महमदपुर के खसरा नंबर 715 रकबा 3 बीघा 10 विस्वा, खसरा 716 रकबा 3 बीघा 18 विस्वा, खसरा नंबर 718 रकबा 01 बीघा 01 विस्वा, खसरा नंबर 921 रकबा 02 बीघा 14 विस्वा, खसरा नंबर 736 रकबा 13 विस्वा गैर मुमकिन नहर सिंचाई विभाग के नाम दर्ज रिकार्ड है। इसी तरह ग्राम धौलपुर के खसरा नंबर 89 रकबा 01 बीघा 05 विस्वा गैर मुमकिन रास्ता नगर परिषद् के नाम दर्ज रिकार्ड है। खसरा नंबर 1013/83 रकबा 11 विस्वा, खसरा नंबर 1014/83 रकबा 02 बीघा 08 विस्वा, खीरा नंबर 1015 रकबा 02 बीघा 04 विस्वा नगर परिषद् के नाम दर्ज रिकार्ड है। खसरा नंबर 820 रकबा 05 विस्वा किस्म गैर नहर, राजस्थान बोर्ड ऑफ मुस्लिम सिया करबला वक्फ संपत्ति के नाम दर्ज रिकार्ड है। खसरा नंर 1269/276 रकबा 01 बीघा गैर मुमकिन नहर सिवायचक दर्ज रिकार्ड है। रिपोर्ट जिला कलकटर को अग्रिम कार्रवाई एवं अनुमोदनार्थ भेजी गई थी। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि 6 वर्ष कागजी घोड़े एक - दूसरे कमरे में दौड़ाए जा रहे हैं।

खुदाई में निकल रहीं कब्रें

बेशकीमती सरकारी भूमि एवं खातेदारों की भूमि पर अनियमित तौर-तरीकों से किए जा रहे निर्माण कार्य के दौरान खुदाई में पुरानी कब्रें निकल रहीं हैं। भू कारोबारी कब्रों पर मिट्टी डलवाकर सबूतों को नष्ट कर रहा है। मुस्लिम समुदाय हक जता रहा है। वक्फ बोर्ड ने मित्तल कॉलोनी की समूची जमीन पर हक जताते हुए 30 अप्रेल को जिला कलक्टर को ज्ञापन दिया है। जिला कलक्टर ने तत्काल मौके पर तहसीलदार (भू.अ.) सर्वे के लिए भेज दिया। सर्वे रिपोर्ट प्रकाश में नहीं आई है। रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं होने से चर्चाओं का बाजार गर्म है।

आश्चर्य किंतु सत्य

घनी आबादी में सैकड़ों बीघा सरकारी भूमि मौजूद थी। बावजूद चिकित्सालय और बालिका शिक्षण संस्थान के लिए 3-4 किलोमीटर दूर भूमि आवंटित की गई। उल्लेखनीय है कि नगर परिषद् के क्षेत्राधिकार में समाहित राजस्व गांव की करीब 600 बीघा सरकारी व सार्वजनिक उपयोग की भूमि उपलब्ध है, जिसकी कीमत 30 हजार करोड़ रुपए से अधिक बताई जा रही है। समय रहते परिषद् भूमि से अतिक्रमण हटा नगर परिषद् को सौंप दी जाती तो सरकार की इच्छा शक्ति भी दिखाई देती और भूमाफिया रोडपति से करोड़पति नहीं बनते। रसूखदार मुख्य सचिव के आदेश और नगरीय विकास विभाग के निर्देशों को धूल चटाने में कामयाब नहीं होते। पिछले कई वर्षों से मुख्य सचिव के आदेशों की क्रियान्विति का इंतजार है। अभी तक 2 कार्यकाल भाजपा की वसुंधरा राजे एवं एक कार्यकाल कांग्रेस के अशोक गहलोत सरकार का बीत चुका है। वर्तमान में भाजपा की भजनलाल सरकार है। सुशासन कब आएगा, कुछ कहा नहीं जा सकता।

जन प्रतिनिधियों व सभापतियों पर कटाक्ष

वोटर एम.एल.ए. अब्दुल सगीर, बीएल कुशवाह, शोभारानी, सभापति रीतेश शर्मा, कमल कंसाना और खुशबूसिंह पर भी कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि यह कैसे जन प्रतिनिधि हैं, जिन्होंने बीते 14 साल में जमीन की सुरक्षा के लिए जिला कलक्टर को एक लाईन की चिट्ठी नहीं लिखी। कमल कसाना तो अप्रत्यक्ष रूप से जगन टॉकीज के पास नाले की भूमि पर निर्मित कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स में हिस्सेदार बन गए और करोड़ों रुपए की स्टाम्प ड्यूटी की चोरी करा दी। मामले की जांच अभी तक नहीं हुई है। वहीं रीतेश शर्मा ने अनियमित तौर-तरीकों से एमएल कॉम्प्लेक्स खड़ा कर दिया। क्या ऐसे नेता वोटर के हितों की रक्षा कर सकते हैं?

कहाँ गई जमीन, कौन करेगा कार्रवाई?

धौलपुर शहर के इर्द-गिद सभी पटवार सर्किलों के भू अभिलेख में दर्ज खसरा नंबर 1, मंदिर माफी, उद्यान, नाले-नालियों, औद्योगिक क्षेत्र, नजूल, फुटपाथ, सड़क, चंबल रिवाइंस, अभ्यारण्य एवं वन विभाग आदि की जमीन कहाँ गई? उमरदराज लोगों की मानें तो कुछ जमीन के पट्टे अनियमित तौर-तरीकों से नगर पालिका ने दे दिए और कुछ जमीन पर रसूखदारों ने कब्जा कर लिया। यहां तक कि ठोस पैरवी के अभाव में संस्कृत विद्यालय व पोखर की जमीन का मामला हाईकोर्ट में लटक रहा है। कब्जाधारी जानते हैं कि जमीन को हथियाने का सबसे अच्छा तरीका निचली अदालतों से लेकर उच्च न्यायालय हैं।

समाज के हित में किसी भी सामाजिक मुद्दे, भ्रष्टाचार के खुलासे के लिए मय दस्तावेज हमसे सम्पर्क करें (हम बनेंगे आपकी आवाज़) -7610866001,8946840063

रील के लिए यातायात नियमों की उड़ी सरेआम धज्जियां

बिना ड्राइवर केबजरी से भरा ट्रैक्टर को घाटे पर चढ़ाया

राजस्थान की राजनीति

दौसा (विष्णु आशीर्वाद)। आपने ऐसे तो कई वीडियो इंस्टाग्राम पर देखे होंगे। जो अपने आप में अद्भुत है। लेकिन ऐसा ही एक वीडियो दौसा जिले के लालसोट में देखने को मिला जहां पर लालसोट से दौसा की ओर आने वाले चढ़ाई पर एक बजरी से भरा ओवरलोड ट्रैक्टर बिना ड्राइवर के ही चढ़ता दिख रहा है। जबकि इस घाटे के चढ़ाई पर अच्छे-अच्छे वाहन चढ़ नहीं पाते हैं। ऐसे में आए दिन यहां पर कई दुर्घटना भी हो चुकी है। इंस्टाग्राम यूजर गोलू टाइगर की आईडी से ये वीडियो अपलोड हुआ है। वायरल वीडियो में

बिना ड्राइवर के बजरी से भरा ओवरलोड ट्रैक्टर धड़ल्ले से बिना ड्राइवर के चढ़ाई पर चढ़ता हुआ दिख रहा है। इसे कोई भूत या देवी देवता या फिर जादूगरी नहीं है। ये तो एक लापरवाह इंस्टाग्राम यूजर ने ट्रेक्टर की स्पीड को स्थिर कर वीडियो वायरल किया है। जो यह वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर जमकर सुर्खिया बटोर रहा है। हालांकि यह वीडियो कब का है इसकी हम पुष्टि नहीं करते। लेकिन इस तरह का वीडियो लोगों को हैरान कर देने वाला है। ऐसे वीडियो में दिख रहा ट्रैक्टर के आगे के टायर ऊपर है ऐसे में दुर्घटनाओं की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है। लेकिन बजरी से भरे ट्रैक्टर को देखकर तो लगता है कि ट्रैक्टर चालक पूरी तरह लापरवाह है और वह खुद तो नीचे उतर गया और ट्रैक्टर की रेस को स्थिर करके घाटा की चढ़ाई को चढ़ा रहा है और इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया इंस्टाग्राम पर डालकर जमकर सुर्खिया बटोर रहा है जो इन दिनों चर्चा का विषय है। अब ऐसे लापरवाह वीडियो सामने के आने के बाद पुलिस प्रशासन किस तरह की कार्रवाई करता है यह आने वाला वक्त बतायेगा।

एसआई भर्ती परीक्षा-2021: पेपर लीक में फरार 12 आरोपियों पर 5.75 लाख रुपए का इनाम घोषित

राजस्थान की राजनीति

जयपुर। पेपर लीक मामलों में फरार चल रहे 12 आरोपियों पर एसओजी ने 5.75 लाख रुपए के इनाम घोषित किए हैं। सबसे अधिक 1 लाख रुपए का इनाम यूनिक उर्फ पंकज भांबू पर रखा है। यूनिक को वनपाल पद से बर्खास्त कर दिया गया है। पुलिस को विदेश भागने की आशंका है। भांबू ने ही रवींद्र बाल भारती स्कूल सोडाला से एसआई भर्ती का पेपर लीक किया था। पेपर लीक माफिया पर राजस्थान में पहली बार इतना बड़ा इनाम घोषित किया गया है। देश में भी ऐसा संभवत= पहली बार हुआ है। एसओजी एडीजी वीके सिंह का कहना है कि इनमें पेपर लीक करने से लेकर डमी अभ्यर्थी के रूप में बैठने वाले आरोपी भी शामिल हैं। साथ ही पेपर लीक गैंग से जुड़े लोग भी शामिल हैं। फरार इनामी आरोपियों

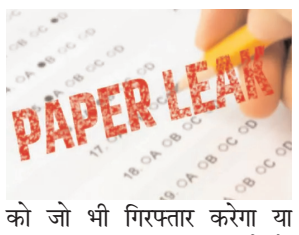

को जो भी गिरफ्तार करेगा या करवाएगा या गिरफ्तार करवाने के लिए सही सूचना देगा, उसे नकद राशि पुरस्कार में दी जाएगी। अब तक 33 ट्रेनी एसआई को गिरफ्तार किया जा चुका है, जिनमें से 3 ने ट्रेनिंग जॉइन नहीं की थी। इनके अलावा 12 पेपर लीक करने वाले गैंगस्टर को भी गिरफ्तार किया है। अब तक कुल 45 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इससे पहले राजस्थान पुलिस ने सेकंड ग्रेड टीचर भर्ती परीक्षा मामले में आरोपी सुरेश ढाका पर एक लाख रुपए का इनाम घोषित किया था। ढाका अब तक फरार है। सब इंस्पेक्टर पेपर लीक में भी इसकी संलिप्तता पाई गई है।

हाईकोर्ट आदेश की अनदेखी कर

जमानत देने वाले एडीजे का मामला सीजे को भेजा

राजस्थान की राजनीति

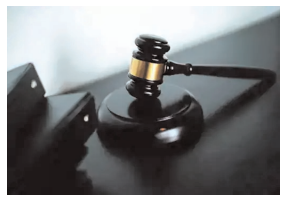

जयपुर। प्राणघातक हमले से जुड़े मामले में हाईकोर्ट के आदेशों की अनदेखी व अनादर कर आरोपी को जमानत देने वाले सेशन न्यायालय अजमेर के एडीजे का मामला हाईकोर्ट ने सीजे को भेज दिया है। वहीं आरोपी सेठू उर्फ अंग्रेज को एडीजे की ओर से दी गई जमानत को भी रद्द कर दिया। जस्टिस उमाशंकर व्यास ने यह आदेश आरोपी के नियमित जमानत प्रार्थना पत्र को खारिज करते हुए दिया। हाईकोर्ट ने कहा कि इस कोर्ट ने 16 नवंबर 2022 को सेतू उर्फ हड्डी के जमानत आदेश में स्पष्ट रूप से निष्कर्ष दिया था कि आहत पप्पू के प्राणाघातक चोटें सेठू उर्फ अंग्रेज ने ही पंहुचाई थी। लेकिन सेशन न्यायालय अजमेर के लिंक अधिकारी ने 19 दिसंबर 2022 के आदेश में हाईकोर्ट के आदेश की पूरी तरह से अनदेखी करते हुए उसके विपरीत आदेश दिया है। विशेष लोक अभियोजक संजीव महला ने बताया कि प्राणघातक हमले के मामले में दो आरोपी सेठू उर्फ अंग्रेज व सेतू उर्फ हड्डी थे। हाईकोर्ट ने सेतू उर्फ हड्डी को जमानत देते समय माना था कि सेठू उर्फ अंग्रेज ही मुख्य आरोपी है।

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक एवं संपादक रमाकांत गोस्वामी द्वारा महारानी प्रिन्टर्स, 17 मां वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड़ जयपुर छपवाकर/मुद्रित कर, पीपलेश्वर मंदिर के पीछे, नला मौहल्ला,दौसा (राजस्थान)-303303 से प्रकाशित किया। संपादक: रमाकान्त गोस्वामी, कार्यकारी संपादक भूपेंद्र कुमार शर्मा, स्थानीय संपादक: संजय लाटा (अवैतनिक) आरएनआई नं. RAJHIN/2012/43137, ब्रांच ऑफिस: 18k3, पंकज सिंघवी मार्ग, ज्योति नगर, जयपुर-302002, मो. नं. 7610866001, हैल्प लाईन नं.: 8946840063, ईमेल- tniawaz.news@gmail.com, Group of Sites- www.hpnews.in, www.right2action.in, www.jaipurtak.com, www.dharmjagran.com, www.hindus-tanpatrika.com, www.freedomathought.com, www.tniawaaz.in (* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तदायी), किसी भी वाद-विवाद से निपटने के लिए न्यायालय जयपुर मान्य होगा।